D.El.Ed.

DIPLOMA IN ELEMENTARY EDUCATION

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि

(डी.एल.एड.)

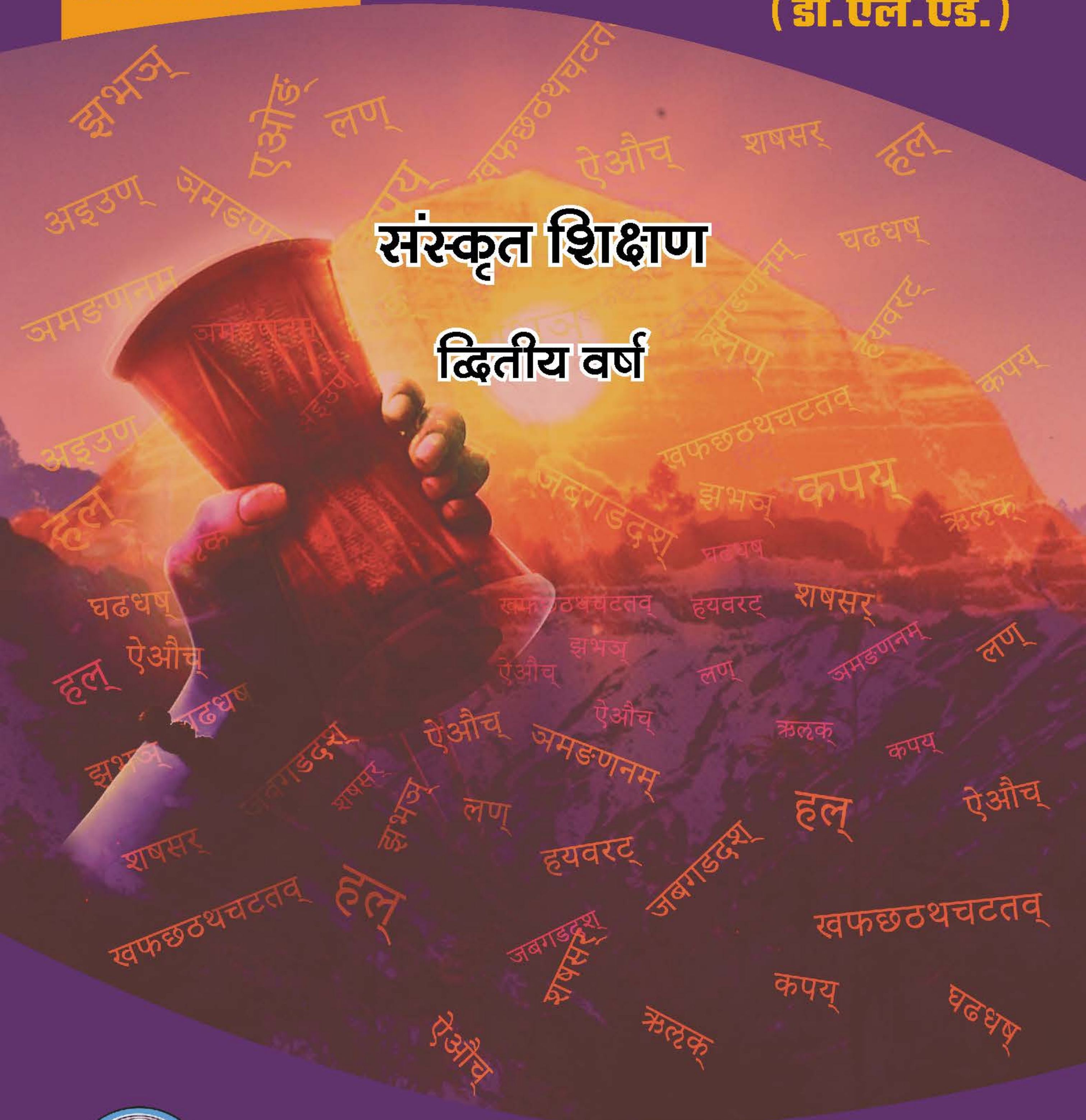

संस्कृत शिक्षण

द्वितीय वर्ष

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (डी.एल.एड.)

Diploma in Elementary Education (D.El.Ed.)

संस्कृत शिक्षण

द्वितीय वर्ष

प्रकाशन वर्ष–2021

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रकाशन वर्ष–2021

संस्कृत शिक्षण

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

डी. राहुल वेंकट I.A.S.

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

पाठ्य सामग्री समन्वय

डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

विषय संयोजक

बी.पी. तिवारी
डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

विशेष सहयोग

यू.के. चक्रवर्ती

आर. के. वर्मा

आवरण एवं लेआउट

सुधीर कुमार वैष्णव, हिमांशु वर्मा

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर उन सभी लेखकों/प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनकी रचनाएँ/आलेख इस पुस्तक में समाहित है।

प्राक्कथन

विद्यालय में अध्ययनरत बच्चे भविष्य में राष्ट्र का स्वरूप व दिशा निर्धारण करते हैं तथा विद्यालय शिक्षक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में किसी अन्य विकासात्मक प्रसास की तरह समाज की बदलती आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं।

''शिक्षा बिना बोझ के'' यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) के अनुसार शिक्षकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल में अध्ययन–अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा कोठारी आयोग (64–66) से भी स्पष्ट है कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया गया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करें, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे, बच्चों की जिज्ञासा को बनाए रखें उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करें उनके अनुभवों का सम्मान करें। तात्पर्य यह कि आज की जटिल परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व महत्वपूर्ण हो गई है।

इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षक–शिक्षा को और कारगर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक–शिक्षा में आमूल–चूल परिर्वतन की आवश्यकता बताते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में शिक्षकों की भूमिका के संबंध में कहा गया है ''सीखने–सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समर्थ बनाएँ।''

प्रश्न यह है कि शिक्षक को तैयार कैसे किया जाए? बेहतर होगा कि विद्यालय में आने के पूर्व ही उसकी बेहतर तैयारी हो, इसके लिए उसे विद्यालय के अनुभव दिए जाएँ। इसीलिए शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम व विषयवस्तु को पुनः देखने की जरूरत महसूस हुई, और डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

पाठ्यसामग्री का लक्ष्य शिक्षा की समझ, विषयों की समझ, बच्चों के सीखने के तरीके की समझ, समाज व शिक्षा का संबंध जैसे पहलुओं पर केन्द्रित है। पाठयक्रम में शिक्षण के तरीकों पर जोर देने के स्थान पर विषय की समझ को महत्व दिया गया है। साथ ही शिक्षा के दार्शनिक पहलू को समझने, पाठ्यचर्या के आधारों को पहचानने और बच्चों की पृष्ठभूमि में विविधता व उनके सीखने के तरीकों को समझने की शुरुआत की गई है।

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखक/प्रकाशकों की पाठ्य सामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखकर उनके मूल स्परूप को लिया गया है। कहीं–कहीं स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है, कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से ली गई है। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सके। इग्नू और एन.सी.ई.आर.टी. सहित लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। हम विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, दिगंतर जयपुर, एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बैंगलुरू, आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन पुणे, आई.आई.टी. कानपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर के आभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट/बी.टी.आई.के संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन–सामग्री को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

अंत में पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सहयोगियों का हम पुनः आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम तैयार करने पाठ्य सामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्य सामग्री को यह स्वरूप दिया जा सका। पाठ्य–सामग्री के संबंध में शिक्षक –प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ–साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

रायपुर
वर्ष 2021

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
छत्तीसगढ़,रायपुर

विषय–सूची

इकाई	अध्याय	पेज न.

इकाई–1 **संस्कृत भाषा शिक्षण–** **1–5**

- संस्कृत भाषा को व्यवहारपरक कैसे बनाएँ ?
- संस्कृत भाषायी कौशलों का विकास कैसे हो ?
- संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता कैसे विकसित करें ?
- संस्कृत के द्वारा नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें ?
- संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में अभिरुचि कैसे सृजित करें ?

इकाई–2 **आधार पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु पर आधारित मनोरमा (संस्कृत कक्षा–8)** **6–12**

- सरल संस्कृत में गद्य पठन
- सरल संस्कृत में पद्य पठन
- लघु कथा/आरव्यायिकाओं को सरल संस्कृत में कैसे अवबोध कराएँ ?
- संस्कृत के प्रति बच्चों में अभिरूचि बढ़ाने हेतु
- स्वस्तिवाचन/मङ्गलाचरण कैसे करावें ?
- मित्र/माता/गुरू को सरल संस्कृत में पत्र कैसे लिखें ?

इकाई–3 **व्याकरणिक विधाएँ** **13–29**

- भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि के स्वरूप को कैसे निर्धारित करें ?
- संस्कृत के संधि व समास युक्त शब्दों को सरल कर कैसे बोध कराएँ ?

विषय–सूची

इकाई	अध्याय	पेज न.

- बच्चों को संस्कृत कारकों का बोध कराते हुए वाक्य प्रयोग की अवधारणा को कैसे पुष्ट करें ?
- सरल संस्कृत में क्रिया, पुरूष काल व लिङ्ग का प्रयोग कैसे करावें ?
- सरल संस्कृत में वाच्य परिवर्तन कैसे करावें ?
- गद्य शिक्षण अथवा पद्य शिक्षण में आये अव्यय अथवा उपसर्गों का बोध कराते हुए बच्चों को सरल संस्कृत कैसे सिखाएँ ?
- सरल संस्कृत में कृदन्तों का व्यावहारिक प्रयोग कैसे करावें ?

इकाई–4	**काव्यतत्व (काव्यतत्वों की जानकारी)**	**30–36**

- मात्रिक व वर्णिक छंदों का कैसे बोध करावें ?
- अनुष्टुप, उपेन्द्रवजा, द्रुतविलंबित तथा वसंततिलका आदि छंदों का ज्ञान बच्चों को कैसे कराएँ ?
- अनुप्रास, यमक व श्लेष जैसे अलंकारों के माध्यम से बच्चों में काव्यगत सौंदर्यानुभूति का बोध कैसे करावें ?
- करूण रस तथा वीर रस के माध्यम से काव्यगत रसानुभूति कैसे करावें ?
- सरल संस्कृत वाक्यों में लाकोक्ति/मुहावरें का प्रयोग कर संस्कृत के भाव को कैसे सुदृढ़ीकरण करें ?

	सीखने के प्रतिफल कक्षा–6,7,8	**37–42**

इकाई – 1
संस्कृत भाषा शिक्षण

01. संस्कृत भाषा को व्यवहारपरक कैसे बनाएँ – संस्कृत भाषा को व्यवहार परक बनाना आवश्यक है, इससे छात्रों में संस्कृत सीखने के प्रति रूचि जागृत होगी तथा स्वयं सीखने की प्रवृति का विकास होगा। इससे संस्कृत सीखना आनंददायी भी होगा। संस्कृत को व्यवहार परक बनाने के लिए कुछ स्वाधिगम इस प्रकार है–

(1) छात्रों के बोलचाल की प्रयुक्त भाषा में संस्कृत का प्रयोग–यथा छत्तीसगढ़ी में 'राँधना' संस्कृत के रन्ध धातु से बना हुआ शब्द 'रन्धयति' से मिलता है। इसी प्रकार असनान–स्नान, उपास–उपवास आदि। दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाले अन्य शब्द यथा लिखना–लिख्, चरना–चर्, करसा–कलश, अंगरी–अङ्गुली अंजरी–अञ्जलिः इसी प्रकार से अन्यान्य बहुत से शब्द हैं जो उनके दैनिक जीवन में व्यवहृत होते हैं, किन्तु उन्हें संस्कृत से सन्निकटता का ज्ञान नहीं होने के कारण वे इसे जान नहीं पाते हैं, ये सभी संस्कृत से निःसृत शब्द है। यदि छात्रों को उनके व्यावहारिक जीवन में प्रयोग आने वाले वस्तुओं के बारे में सूची बनाने के लिए कहा जाए तथा बाद में संस्कृत से उनकी समीपता का पता लगाया जाए तो अनेक शब्द संस्कृत के निकट होंगे।

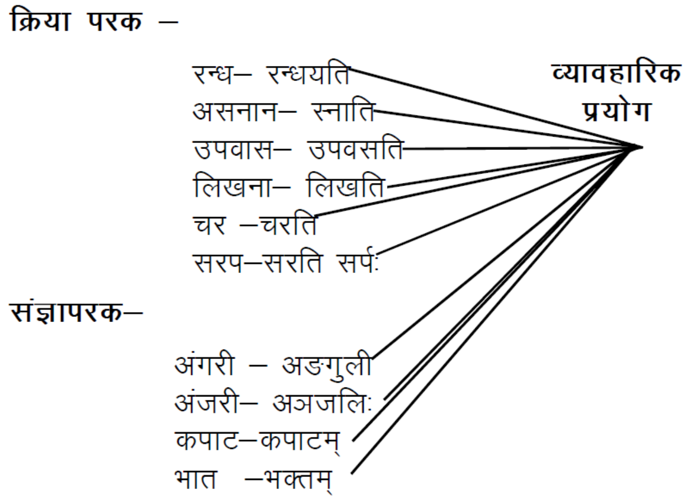

02. बच्चों में भाषायी कौशलों का विकास – संस्कृत में सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना छात्रों में विकसित करना होता है। छात्र स्वयं उक्त कौशलों का विकास कर सके इसके लिए स्वाधिगम इस प्रकार हैं –

1. सुनने का अभ्यास – संस्कृत की छोटी–छोटी कहानियों को सुनाकर श्रवण का अभ्यास कराया जा सकता है। पश्चात् छात्रों को सुनाने का अवसर शिक्षक के द्वारा दिया जाए, यह कार्य छात्रों के द्वारा ही सम्पन्न कराया जावें, इससे सही श्रवण क्षमता का विकास होगा।

2. बोलने का अभ्यास – संस्कृत के किसी सरल अन्विति का चयन कर उसे शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाए इससे उनमें शुद्ध उच्चारण क्षमता का विकास होगा।

3. पढ़ने का अभ्यास – छात्रों को शिक्षक द्वारा स्वयं के वाचन के पश्चात् पढ़ने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जावे इसके लिए सरल कहानियाँ एवं सुभाषित श्लोक पठन अभ्यास के लिए उपयुक्त होगा।

4. लिखने का अभ्यास – संस्कृत का शुद्ध लेखन छात्रों के लिए एक बड़ी समस्या है इसका कारण यह है, कि हम छात्रों को लिखने का पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं करते। शुद्ध लेखन के अभ्यास के लिए छात्रों को संस्कृत में गृहकार्य प्रतिदिन दिया जावे इससे उनमें संस्कृत लिखने की क्षमता का विकास होगा। शिक्षक श्रुतलेख लिखाकर भी छात्रों में संस्कृत लेखन का अभ्यास करा सकते हैं। यथा –

विलक्षणा बुद्धिः

पुरा जम्बुवृक्षे एको वानरः प्रतिवसति स्म। सः नित्यं तस्य फलं खादति स्म। तस्य अधः एको मकरः प्रतिदिनम् आगच्छति स्म। वानरं दृष्ट्वा सः व्यचारयत्। सः मधुरं फलं प्रतिदिनं खादति। अतः तस्य हृदयं अपि अति मधुरं भविष्यति। मदीयायाः भार्यायाः कृते उपहार स्वरूपं तस्य हृदयं कथं प्राप्नुयात् इति चिन्तयति। येनकेन प्रकारेण विश्वास प्राप्य वानरं स्वपृष्ठे धृत्वा पत्नीं प्रति गच्छति। अत्युत्साहेन उत्साहेन मार्गे मकरः कथयति–मित्र! तव हृदयं पत्नीं दातुं नयामि। एतत् श्रुत्वा वानरः वदति – भो मित्र! अहं तु स्वकीयं हृदयं वृक्षोपरि स्थापितम् अतः त्वं माम् पुनः जम्बूवृक्षं समीपं नयतु। मकरः तस्य वचनं पालयति। यदा वानरः वृक्षं समीपं आगच्छति तदा शीघ्रं तस्य पृष्ठात् कूर्दयित्वा वृक्षोपरि आरोहति। एवं कथयति मित्र ! त्वं मूखोऽसि गृहं प्रत्यागच्छ, नाहं हृदयं दास्यामि। एतत्श्रुत्वा मकरः भृशं खिन्नमभवत्। ईदृशः स वानरः स्वकीयया विलक्षणबुद्धया स्वरक्षणम् अकरोत्।

03. संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता कैसे विकसित करें ?

संस्कृत में वार्तालाप करना संस्कृत छात्रों के लिए आवश्यक है। इसके लिए छात्रों को अभ्यास का अवसर दिया जाना होगा। अभ्यास के अभाव में संस्कृत वार्तालाप संभव नहीं है। संस्कृत बोलने के लिए स्वाधिगम के अंतर्गत निम्नांकित उपाय अपना सकते हैं –

संस्कृत वार्तालाप क्षमता का विकास

1. पर्याप्त अभ्यास कराया जाए।
2. कक्षागत गतिविधि करायी जाए।
3. छात्र आपस में संस्कृत भाषा में वार्तालाप करें।

(1) कक्षा में अभ्यास – संस्कृत शिक्षक द्वारा कक्षा में छात्रों को संस्कृत में संभाषण का अभ्यास कराया जावे, इसके लिए छात्रों को अपना परिचय सरल संस्कृत में देने हेतु प्रोत्साहित करें।

(2) चित्र द्वारा अभ्यास – शिक्षक श्यामपट में – पेड़ का चित्र बनाकर उसमें फल, फूल, शाखा, पत्ते, पक्षी आदि बनाकर उसके बारे में छात्रों से संस्कृत में बोलने हेतु कहें। इस प्रकार अन्यान्य चित्र बनाकर कक्षा के छात्रों को अवसर दिया जाए।

(3) छात्रों में परस्पर संस्कृत वार्तालाप – छात्रों को इस तरह प्रोत्साहित किया जावे कि वे आपस में सरल संस्कृत भाषा में वार्तालाप कर सकें। छात्र अपने मित्र या सहपाठी से संस्कृत में बोलने का अभ्यास कर सके। उदाहरणार्थ – वार्तालाप की शुरूआत इस प्रकार हो सकती है –

प्रथमः	–	मित्र ! त्वं कुत्र गच्छसि ?
द्वितीयः	–	मित्र ! अहं विद्यालयं गच्छामि।
प्रथमः	–	त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ?
द्वितीयः	–	अहं नवम्यां कक्षायां पठामि।
प्रथमः	–	मित्र ! विद्यालये कति छात्राः पठन्ति।
द्वितीयः	–	मित्र ! अस्माकं विद्यालये पञ्चाशत्छात्राः पठन्ति।
प्रथमः	–	किम् ? विद्यालये उद्यानम् अस्ति।
द्वितीयः	–	आम् । एकं रम्यं उद्यानं विद्यालयस्य पूर्वभागे अस्ति।
प्रथमः	–	मित्र ! क्रीडाङगनम् अस्ति ना वा। ?
द्वितीयः	–	मित्र ! विशालः क्रीड्ंागनम अस्ति।
प्रथमः	–	मित्र ! नमस्कारः श्वः पुनर्मिलामः।
द्वितीयः	–	नमस्कारः मित्र।

04. संस्कृत में नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें? – संस्कृत भाषा नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण भाषा है। संस्कृत की सूक्तियाँ, नीति वचनानि, सुभाषित श्लोकों का संग्रह, नैतिक मूल्यों की अमूल्य निधि है। कुछ स्वाधिगम के लिए इस प्रकार की गतिविधि किया जाना उपयुक्त होगा –

!सुभाषितम्!
पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि
जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैःपाषाण खण्डेषु
रत्नसंज्ञा विधीयते।।

1. सुभाषित श्लोक वाचन – कक्षा में सुभाषित श्लोकों का अर्थसहित वाचन का अभ्यास हो। इससे श्लोकों में निहित सदाचार के मूल्यों को छात्र ग्रहण कर सकेंगे।

2. संस्कृत के नीतिवचन, नीति शतकम्, नीति श्लोक आदि का छात्रों से अर्थसहित कण्ठस्थीकरण अभ्यास कराया जावे, जिससे छात्र उन श्लोकों, वचनों में समाहित नीतिपूर्ण बातों को अपने व्यावहारिक जीवन में उतार सकें।

यथा –

''अश्वमघेसहस्राणि सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेवातिरिच्यते।।''

उक्त श्लोक में सत्य की महत्ता प्रतिपादित की गई है। यदि छात्र इस श्लोक के ज्ञान को अपने व्यावहारिक जीवन में अपनाते हैं तो उसमें सदैव सत्याचरण का भाव ही जागृत होगा। संस्कृत के सभी नीति श्लोक किसी न किसी मूल्य की शिक्षा अवश्य देता है।

3. सूक्ति वाचन – छात्रों को सूक्ति वाचन का अर्थ सहित अभ्यास कराया जावे। संस्कृत की सूक्तियाँ, नैतिक ज्ञान से परिपूर्ण है। छोटी–छोटी सूक्तियाँ अपनी अर्थ–गाम्भीर्य से ओत–प्रोत है। इन सूक्तियों के अर्थ को व्यावहारिक जीवन में छात्र अंगीकार करें तो उनमें नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास होगा। यथा – न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। जो श्रम नहीं करते उसके साथ देवता भी मित्रता नहीं करते हैं। इस सूक्ति से छात्रों में श्रम के प्रति निष्ठा के भाव जागृत होंगे। इसी तरह संस्कृत की सभी सूक्तियाँ प्रेरणास्पद है।

05. संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में अभिरूचि कैसे सृजित करें ?

संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में रूचि जागृत करने के लिए निम्नांकित स्वाधिगम विधि अपना सकते हैं –

(1) छात्रों को परिवेशीय भाषा से संस्कृत के माध्यम से जोड़ना।

(2) छात्रों को दैनिक जीवन में शिष्टाचारपरक शब्दों का ज्ञान।

(3) उनके स्वयं के बोलचाल में संस्कृत शब्दों का ज्ञान।

(4) दैनिक उपयोग की वस्तुओं में संस्कृत शब्दों का समावेश।

(5) घर में संस्कृत शब्दों का ज्ञान।

(6) विद्यालय परिवेश में संस्कृत का ज्ञान।

बच्चों के अभिरूचि सृजित करना

छात्रों के लिए संस्कृत एक नवीन भाषा के रूप में होती है। अतएव संस्कृत भाषा सीखने के प्रति छात्रों में रूचि उत्पन्न करना अत्यावश्यक है। छात्रों को उनके दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाले बोल चाल की भाषा से संस्कृत की निकटता को बतलाते हुए अध्यापन करना चाहिए ताकि संस्कृत उसे नवीन भाषा नहीं प्रत्युत् उसकी पहचानी हुई भाषा लगे, इससे संस्कृत सीखने के प्रति उनमें रूचि उत्पन्न होगी।

उपर्युक्त विधियों को अपनाकर संस्कृत शिक्षक छात्रों में स्वाधिगम के माध्यम से संस्कृत सीखने के प्रति अभिरूचि उत्पन्न कर सकेगें।

परिवेशीय भाषा में संस्कृत

केस – केशः,मुड़ी – मुण्डः, मुंह – मुखम्, दाँत – दन्तः, कपार – कपालम्, ओंठ – ओष्ठम्, सींग – श्रृंगम्, पीठ – पृष्ठम्

छात्रों के दैनिक जीवन में शिष्टाचार एवं अन्य संबोधन सूचक

अभिवादन सूचक – नमस्ते – नमस्ते, परणाम – प्रणाम,

बंदगी – वन्द (धातु से)। वन्दे

संबोधन – अरे! वो ! ओ, ए– हे!

आश्चर्य – अह्हा, !अहा! (अहो)

दुःखसूचक – हाय, !धिक्कार! धिक्,! हा! आह!

बोलचाल में संस्कृत

सबो – सर्वे, झन – जनाः, बिरथा – वृथा, तुमन – यूयम्, सत् – सत्यम्, कोस – क्रोशः, एति – इतः, बिख – विषम्, दूरिहा – दूरम्, बन – वनम्, किरपा – कृपा, ऊपर उपरि, सपूत – सुपुत्रः।

दैनिक उपयोग की वस्तुओं में संस्कृत

दतवन – दन्तधावनम्, खटिया – खट्वा, पलंग – पर्यंकम्, छुरी – छुरिका, लहसुन – लशुनम्, मसूर – मसूरः, जीरा – जीरकः, तेल – तैलम्, साग – शाकम्, आलू – आलुकम्, करू – कटुः, मीठ – मिष्टः, भात – भक्तम्, रिश्ता–संबंधी, मितान – मित्रम्, भाई – भ्राता, माई – माता, ससुर – श्वसुरः, ननंद – ननान्दः, सास – श्वश्रुः, सारा – श्यालः।

विद्यालय परिवेश में संस्कृत

पुस्तक – पुस्तकम्, कलम् – लेखनी, शिक्षक – शिक्षकः, पाठशाला – पाठशाला, कमरा – कक्षः, सहपाठी – सहपाठी, विद्यार्थी – विद्यार्थी, कुर्सी – आसन्दिका,मेज– –काष्ठफलकम् , तख्ता – श्यामपटः, चॉक – सुधाखण्डः, डस्टर – मार्जनी, स्टूल – संवेशः।

———**000**———

इकाई–2
आधार पाठ्यवस्तु मनोरमा (संस्कृत कक्षा 8)

06. सरल संस्कृत में गद्य पठन – संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत में अनेक गद्य विधाओं का सूत्रपात हुआ है, जिन्हें सरल संस्कृत के द्वारा और अधिक रूचिकर बनाया जा सकता है। सरल संस्कृत में गद्य का पठन निम्नानुसार किया जा सकता है –

(1) कथा साहित्य पठन –

(2) कहानी पठन –

(3) नाट्य पठन –

(4) चम्पूकाव्य पठन –

संस्कृत में गद्य पठन

साहित्य में अनेक विधाएँ होती है, जिन्हें गद्य व पद्य के द्वारा जनमानस तक पहुँचाया जाता है। मनुष्य अपने अन्तःकरण या मन की संकल्पना को व्यक्त करने के लिए इन्हीं विधाओं का प्रयोग करता है। छात्रों को संस्कृत भाषा में लिखने व बोलने का अभ्यास गद्य के द्वारा कराना ज्यादा श्रेयस्कर है। संस्कृत कहानियों के द्वारा सरल संस्कृत में गद्य का पठन निश्चित ही बाल मस्तिष्क को विकसित करेगा।

उक्त विधाओं का पठन शुद्धतापूर्वक उच्चारण के साथ किस प्रकार किया जावे इसका अभ्यास छात्रों को पर्याप्त दिया जावे। शिक्षक द्वारा पहले पढ़ाये जाने वाले पाठ का आदर्श–वाचन स्पष्ट रूप से किया जावे, जिससे छात्र उच्चारण को अच्छी तरह समझ सकें। इसके बाद छात्रों को अनुकरण वाचन का अवसर प्रदान किया जावे। शिक्षक छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किये जाने के समय उनके द्वारा कोई त्रुटि की जा रही हो, तो उसका निवारण करेंगे।

शुद्ध उच्चारण के साथ पठन के लिए यह आवश्यक है, कि पाठ में आये हुए संधि एवं सामासिक शब्दों को पृथक् से श्यामपट पर लिख देवें तथा उसका विच्छेद एवं विग्रह करके छात्रों को अभ्यास कराएँ। इससे छात्र कठिन शब्दों को स्पष्टता के साथ उच्चारण कर सकेंगे।

उदाहरणार्थ – एक गद्य की अन्विति प्रस्तुत है –

एको वृद्धव्याघ्रः स्नातः कुशहस्तः सरस्तीरे ब्रूते –''भोभोः पान्थाः ! इदं सुवर्णकङ्कणं गृह्यताम्। ततो लोभाकृष्टेन केनचित्पान्थेन अलोचितम् –भाग्येनैतत् सम्भवति। किंत्वस्मिन्नात्मसंदेहे प्रवृत्तिर्न विधेया। पथिकः ब्रूते–'कुत्र तव कंङ्कणम?'व्याघ्रो हस्तं प्रसार्य दर्शयति। पान्थोऽवदत्–'कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः? व्याघ्र उवाच –'श्रुणु रे पान्थ! पूर्वमेव यौवनदशायामति दुर्वृतः आसम्। अनेकगोमानुषाणां वधान्मे पुत्राः मृताः दाराश्च। वंशहीनश्चाहम्।ततः केनचिद् धार्मिकेणाहमादिष्टः–''दानधर्मादिकं चरतु भवान्।'' तदुपदेशादिदानीमहं स्नानशीलो दाता वृद्धो गलित नखदन्तो कथं न विश्वासभूमिः ?

उक्त गद्यांश का शिक्षक स्वयं आदर्शवाचन करेंगे तथा अन्विति में आए हुए सन्धेय एवं सामासिक शब्दों के विच्छेद व विग्रह श्यामपट पर लिखकर विद्यार्थियों को उसके उच्चारण अभ्यास करायेंगे। इससे विद्यार्थी अनुकरण वाचन के समय उन शब्दों का सही उच्चारण के साथ पठन करेंगे। गद्यांश में आए अन्य कठिन शब्दों के अर्थ भी छात्रों को समझायेंगे, ताकि गद्य का हिन्दी में अनुवाद करते समय विद्यार्थी सरलता का अनुभव करेंगे।

07. सरल संस्कृत में पद्य पठन – संस्कृत में श्लोक पठन की अपनी एक शैली होती है, जिसे श्लोक की प्रकृति के आधार पर पढ़ा जाता है। प्रकृति से तात्पर्य 'छन्द' के आधार पर उसकी रचना है। प्रत्येक छंद की रचना में भिन्नता पाई जाती है उसके आधार पर गेयता, आरोह–अवरोह, लय में अंतर आता है। लौकिक संस्कृत के श्लोक व वैदिक संस्कृत के ऋचाओं में भी अंतर होता है। श्लोक पठन में हाव–भाव का भी महत्व होता है। इन सभी बातों का ध्यान रखा जाता है। शिक्षक छात्रों को श्लोक वाचन का पर्याप्त वाचन कराएँ। सस्वर वाचन से वातावरण का स्वयमेव निर्माण होता है।

संस्कृत में पद्य (श्लोक) पठन

संस्कृत में श्लोक पठन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें –

1. शुद्धोचारण के साथ पठन।
2. लयात्मक रूप से पठन।
3. आरोह – अवरोह का ज्ञान।
4. संधेय और सामासिक शब्दों का ज्ञान एवं विग्रह करने की क्षमता।
5. गेयता के भाव को बनाए रखना।
6. विषय – शिक्षक द्वारा सटीक आदर्श वाचन।
7. हाव – भाव या भावभंगिमा का प्रदर्शन।

उदाहरण –

1. **''रूपयौवनसंपन्ना विशालकुलसंभवाः।**
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।''

अन्वय – रूपयौवन–सम्पन्नेन विशाल–कुले सम्भवाः (उत्पन्नः) मानवाः विद्याहीना न शोभन्ते। निर्गन्धा (गन्धरहिता) किंशुकाः इव न शोभन्ते।

सौंदर्य तथा यौवन से युक्त बड़े
कुल में उत्पन्न मनुष्य विद्याहीन होने
से सुगंधरहित टेसू (पलाश) के पुष्पों
के समान शोभा नहीं पाते हैं।

(2) '' अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्!।।''

हे राजन् ! नित्य धन का लाभ, आरोग्य, प्रियतमा और मधुर भाषिणी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और धन का लाभ कराने वाली विद्या, ये संसार के छः सुख है।

(3) '' विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतद्
ज्ञानाय दानाय रक्षणाय च।।''

दुष्ट की विद्या विवाद के लिए, धन मद के लिए और शक्ति दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के लिए होती है। ठीक इसके विपरीत सज्जनों की विद्या, ज्ञान, धन, दान तथा शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

आदि कविः बाल्मीकिः

एकदा बाल्मीकिः शिष्यैः सह स्नानं कर्तुं तमसा नदी तटमगच्छत्। सः तत्रापश्यत्। यद व्याध ोन क्रौन्चपक्षिणं वधमकरोत्। क्रौन्ची दुःखी भूत्वा रूदन् आसीत्। क्रौन्ची दुखतः मुनिरपि अत्यन्तं दुःखितं जातम्। मुनिः क्रौच्याः आकुलितायां दशायां व्याधं प्रति कारूणिकः शब्दः निर्गच्छत् कथितच्च।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यद् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

मुनेः मुखात् निःसृतशब्दाः छन्दोनिबद्ध ारासन्। तेन कारूणिकेन शब्देन दृश्यान्तरं मुनिना दुःखितापि जाता। तस्मिन्नेव समये ब्रहमा तत्र प्रादुरभवत्। एवं कथितञ्च यद् त्वदीयवाण्यां शारदा विराजति। अतएव इदं श्लोकं आधारीकृत्य (भगवान् राम चन्द्रस्य जीवन चरित्रं) रामायणं नामकं महाकाव्यं रचनां करोतु। अस्माद् कारणात् रामायणं विश्वविख्यातं प्रथमं संस्कृतं काव्यस्य रूपं प्रथितम्। एवञ्च अनेन कारेण महर्षि बाल्मीकिः आदिकविरूपेण प्रथितः।

1. **शिक्षक आदर्श वाचन करेंगे।**
2. **कथा के भाव को संक्षेप बतायें।**
3. **छात्र को अनुकरण वाचन का पर्याप्त समय प्रदान करे।**
4. **काठिन्य निवारण करें।**
5. **संधि एवं समास का शब्द विग्रह करें**
6. **भावों का अनुभव करायें।**

विषय शिक्षक उक्त आख्यायिका का शुद्ध वाचन करते हुए छात्रों को शुद्धोचारण के साथ पठन करने हेतु प्रेरित करेंगे।

आधार पाठ्यवस्तु मनोरमा (संस्कृत कक्षा 8)।

08. लघुकथा आख्यायिका को सरल संस्कृत में कैसे अवबोध कराएँ ?

बालकः ध्रुवः

प्राचीन काले उत्तानपादःनाम राजा आसीत्। तस्य सुनीतिः सुरूचिः च द्वे पत्न्यौ स्तः। राज्ञी सुरूचिः राज्ञोऽतीव प्रियासीत्। सुरूचेः पुत्रस्य नाम उत्तमः सुनीतेः पुत्रस्य नाम ध्रुवः चासीत्।

एकस्मिन् दिने राजा सुरूचेः पुत्रमुत्तमम् स्वाङ्के आदाय वार्तालापमकुर्वन्। तद् दृष्ट्वा सुनीतेः पुत्रध्रुवस्य मनसि पितुः अङ्के आरोढुमभिलषत्। तामाभिलाषां विलोक्य सुरूचिः अवदत् – राजाङ्के सिंहासने च योग्यः नासि। यतः त्वं ममोदरे उत्पन्नं नाभवत्।

इत्थं विमातुः कटुवचनं श्रुत्वा बालकः ध्रुवः रुदन् स्वमातरं समीपमगच्छत्। तथा च विमातुः कटुव्यवहार–विषये असूचयत्। पुत्रमुखात् सर्ववृत्तांत श्रुत्वा सुनीतिः अकथयत् –पुत्र ! धैर्यं शान्तिं च धारय। नूनं तदङ्ेक उपविशतुमिच्छसि तर्हि श्रद्धापूर्वकं नारायणमाराधय।

इत्थं मातुः प्रेरणया बालकः ध्रुवः राजभवनं त्यक्त्वा वने गत्वा कठिनं तपं प्रारभत। बालकः ध्रुव मुखाद् निसृतम् –''ऊँ'' नमो भगवते वासुदेवाय'' इति वाक्यं श्रुत्वा तथा ध्रुवस्य तपसा प्रसन्नो भूत्वा भगवान् विष्णुः स्वयमेव आगत्य वरमददात्। येन ध्रुवः स्वर्गलोके अचलं पदं प्राप्तवान्।

लघु कथा पठन

संस्कृत में कथा साहित्य का विपुल भंडार है इससे छात्रों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास सहजता के साथ किया जा सकता है। यह पढ़ने में रूचिकर एवं प्रेरणादायी होती है। विषय शिक्षक लघु कथा का पठन स्वयं कर छात्रों को शुद्धोचारण के साथ पठन हेतु प्रेरित करेंगे।

09. संस्कृत के प्रति बच्चों में अभिरूचि कैसे बढ़े इस हेतु मंगलाचरण/स्वस्तिवाचन कैसे कराएँ।

मंगलाचरण/स्वस्तिवाचन की अवधारणा

मंगल + आचरण – शब्द से सार्थक अर्थ का बोध होता है। किसी कार्य को निर्विघ्न् पूर्वक पूरा करने के लिये मंगलाचरण या स्वस्ति वाचन करने का विधान काव्य एवं शास्त्रों में प्रतिपादित है। मंगल आचरण अर्थात् किसी भी देवी देवता गुरू या आप्त पुरूषों को नमस्कार कर या आशीर्वाद हेतु प्रार्थना करना ही मंगलाचरण या स्वस्ति वाचन कहलाता है।

मंगलाचरण स्वरूप प्रायः दो रूपों में देखा गया है।

1. पद्य या श्लोक नमस्कारात्मक या आशीर्वादात्मक।
2. वेद मंत्रों में स्वस्ति, कल्याण, भद्र वाचक मंत्र का पाठ करना।

मंगलाचरणम्

1. वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।

2. मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरूडध्वजः ।
मंगलं पुण्डीककाक्षः मंगलायतनो हरिः ।।

स्वस्तिवाचनम्

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नो पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।।

उपर्युक्त मंगलाचरण के दोनों श्लोकों में भगवान् गणेश एवं विष्णु को नमस्कार करके सभी कार्यों में सफलता की कामना की गई है। स्वस्ति वाचन पाठ में वेद मंत्रों के माध्यम से इन्द्र वृद्ध श्रवा पूषा, अरिष्टनेमि, वृहस्पति आदि देवताओं से प्रार्थना की गई है कि आप सब हमारे कार्यों में (स्वस्ति) कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

वेद मंत्रों के पाठ में विशेष रूप से आरोह–अवरोह एवं उदात्त अनुदात्त तथा स्वरित चिन्हों के माध्यम से अंग संचालन पूर्वक सस्वर पाठ किया जाने का विधान है। इन मंत्रों का सही और शुद्धोचारण से नादब्रह्म से निकलने वाली ध्वनियाँ हमारे पर्यावरणीय वातावरण को पवित्र करती है। पवित्र वातावरण अद्यतन समय की आवश्यकता है।

इसलिये प्रत्येक कक्षा में शिक्षक अपने पाठ को पढ़ाने के पूर्व मंगलाचरण या स्वस्ति वाचन का पाठ स्वयं करे एवं समूह के रूप में छात्रों से कराएँ। इस प्रकार के गतिविधि से छात्रों में पवित्र विचारों का संचार होगा एवं कक्षा का वातावरण शांत होगा जिससे विषयवस्तु की संकल्पना को सुदृढ़ता मिलेगी और छात्र भी विषय मूल्यों का सहज रूप से अधिगम करेंगे।

अन्यान्य मंगलाचरणम्

सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।

10. मित्र माता व गुरू को सरल संस्कृत में पत्र कैसे लिखें।

सरल संस्कृत में पत्र लेखान –पत्र लेखन का महत्व प्राचीनकाल से है जब संचार साधनों का विकास नहीं हुआ था मौखिक संदेश देकर संदेश वाहक भेजा जाता था। पक्षियों के माध्यम से भी संदेश भेजने की प्रथा रही है। धीरे–धीरे संचार माध्यमों का विकास हुआ, डाक आदान–प्रदान की व्यवस्था हुई। आज के युग में तो सूचनातंत्र बहुत अधिक विकसित हुआ है संचार के नये–नये साधन है। इस युग में भी पत्र की महत्ता बनी हुई है। आज भी पारिवारिक रूप से माता–पिता, पुत्र मित्र आदि को पत्र लिखा जाता है। व्यावसायिक एवं शासकीय पत्र भी पर्याप्त रूप से लिखे जाते है। पत्र लिखने के कुछ आवश्यक निर्देशों का पालन करना पड़ता है। वे इस प्रकार हैं–

संस्कृत में पत्र लेखन

पत्र लेखन का अपना महत्व होता है इसकी विधा इस प्रकार है –

1. औपचारिक –
2. अनौपचारिक –

इसी के आधार पर निम्न प्रकार से पत्र लिखे जाते हैं –

1. पारिवारिक पत्र –
2. व्यावसायिक पत्र –
3. शासकीय पत्र –
4. प्रार्थना पत्र –

पत्र लेखन हेतु आवश्यक निर्देश

1. पत्र की भाषा स्पष्ट व सरल हो।
2. अनावश्यक विशेषण न हो।
3. पत्र लिखने के उद्देश्य स्पष्ट हो।
4. पत्र संक्षिप्त हो।
5. पत्र में यथा निर्दिष्ट स्थान पर संबोधन, पता आदि का उल्लेख हो।

कुछ पारिवारिक पत्र के उदाहरण के माध्यम से छात्रों को सरल संस्कृत में पत्र लेखन का अभ्यास कराया जा सकता है। इसके अन्तर्गत मित्र को पत्र, पिता को पत्र तथा माता को पत्र लिखने का संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है –

01. मित्रं प्रति पत्रम्

देवेन्द्र नगरं, रायपुरतः

दिनांक : 30 सितंबर 2012 ईस्वीयः

प्रिय मित्र दिनेश ! सप्रेम नमस्ते

अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवत्पत्रं प्राप्य अति हर्षमनुभवामि। अत्र मम अध्ययनं सम्यक् चलति। आगामी–दीपमालिकापर्वसमये अवकाशः भविष्यति। तस्मिन् समये अहं गृहं गमिष्यामि। अस्मिन् पर्वणि भवान् अपि मत्गृहे आगम्यताम्। अनेन मह्यमति हर्षो भविष्यति। शेषमन्यत् कुशलम्। पत्रोत्तरं प्रेषणीयम्।

भवत्मित्रम्

सुबोधकुमारः

01. मातरं प्रति पत्रम्

शास. पूर्व माध्यमिक शाला
दुर्गनगरम्
दिनांक : 30 सितंबर 2012

पूज्यामातृचरणयोः

सादरं प्रणमामि

अत्र अहं कुशलोऽस्मि। भवत्या प्रेषितं पत्रं मया परह्यः प्राप्तम्। पठित्वा प्रसन्नोजातः। मम अध्ययनं सुव्यस्थितं चलति। मे अर्द्धवार्षिकी परीक्षा समाप्तमभवत्। प्रश्नपत्रं नाति सरलं नाति कठिनमासीत्। अहं विजयादशम्यावकाशस्य समये गृहमागमिष्यामि। शेष–कुशलमस्ति।

आज्ञाकारीपुत्रः
रमेशः

प्रार्थनापत्रम्

प्रति,

प्रधानाचार्य :

शासकीय विद्यालय रायपुरनगरम्

विषय :– अवकाशाय प्रार्थनापत्रम्।

महोदय,

निवेदनम् अस्ति। यद् दिनाङ्क 01.10.2012 विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थोऽस्मि। मदीया माता रूग्णा अस्ति।

अतः एकदिवसस्यावकाशं स्वीकृत्य माम् अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।

भवच्छात्रः
रमेशकुमारः
अष्टम–कक्षास्थः

इकाई –3
व्याकरण का अर्थ

11. भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि के स्वरूप को कैसे निर्धारित करें–

1.व्याकरणिक विधाएँ –किसी वस्तु को टुकड़ों में विभाजित कर उसका वास्तविक स्वरूप दिखाना। यह शब्द भाषा के संबंध में ही अधिकांशतः प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक भाषा वाक्यों का समूह है तथा वाक्य ही भाषा का आधार है। वाक्य शब्दों का समूह है और शब्द में कई वर्ण (Letter) होते हैं, जिन्हें अक्षर भी कहा जाता है। अक्षर (Syllocble) का शाब्दिक अर्थ है, अविनाशी जो कभी नष्ट नहीं होता है। यदि किसी शब्द का उच्चारण करें, तो उसके अक्षर उच्चारण काल में नाद कहलाते हैं। ध्वनि/नाद (Sound) अविनाशी हैं। उस समय शब्द नादों का समूह होगा। सृष्टि में इन नादों का अनन्त भण्डार है। भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि स्वरूप को समझना आवश्यक है।

मुँह से उच्चरित अ, आ, क्, ख् आदि ध्वनियाँ है। ध्वनियों के लिखित रूप चिह्नों को वर्ण कहते है तथा जिस ध्वनि या ध्वनि समूह का उच्चारण एक श्वास के एक ही आघात में हो जाए उसे अक्षर कहते हैं यथा– आम्, मेम् स्नान। अक्षर ध्वनि का लघुतम रूप होता है अतः इसे विभाजित नही किया जा सकता और ध्वनियाँ दो प्रकार की है–
स्वर और व्यंजन

संस्कृत भाषा में निम्न अक्षरों का प्रयोग होता है–

अ,इ,उ,ऋ,लृ	– ह्रस्व
आ,ई,ऊ,ॠ	– दीर्घ
ए,ओ,ऐ,औ	– मिश्र विकृत दीर्घ

वर्णों का स्थान इस प्रकार होता है !

क,ख,ग,घ,ङ.	– क वर्ग	– कण्ठ
च छ ज झ ञ	– च वर्ग	– तालु
ट ठ ड ढ ण	– ट वर्ग	– मूर्धा
त थ द ध न	– त वर्ग	– दन्त्य
प फ ब भ म	– प वर्ग	– ओष्ठ

ञ, म ङ ण न इनके उच्चारण में नासिका की सहायता की भी आवश्यकता होती है।

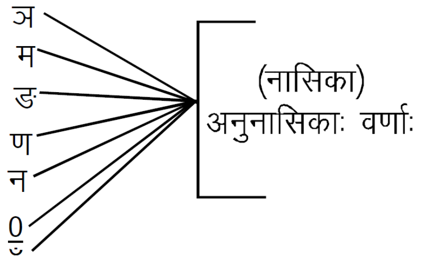

एक ही स्थान से निकलने वाले वर्ण सवर्ण कहलाते हैं। भिन्न स्थानों से उच्चारण किये गए वर्ण परस्पर असवर्ण कहलाते हैं।

य व र ल	– अन्तस्थ वर्णः
श ष स ह	– उष्म वर्णः
0	– अनुस्वारः
ँ	– अनुनासिकः
:	– विसर्गः

उच्चारण को शुद्ध एवं प्रभावी बनाने के लिये स्वाधिगम के अन्तर्गत निम्नांकित गतिविधियाँ हो सकती हैं इससे छात्र स्वयं सीखने में प्रोत्साहित होंगे।

गतिविधि – कक्षा के छात्रों को समूह में बाँट कर अलग–अलग उच्चारण स्थानों से उच्चरित होने वाले अक्षर या वर्ण को शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास इस प्रकार कराया जा सकता है। प्रथम समूह के छात्रों को तालव्य वर्ण का उच्चारण करने का अभ्यास कराया जावे । द्वितीय समूह के छात्रों को कण्ठ वर्ण का उच्चारण तथा तृतीय व चतुर्थ समूह को दन्त्य, मूर्धन्य तथा ओष्ठ एवं नासिका से उच्चरित वर्णों का अभ्यास दिया जावे। जब एक समूह अपनी प्रस्तुति कर रहा हो अन्य समूह के छात्र उसे मनोयोग पूर्वक श्रवण करेंगे यदि उसमें कोई त्रुटि हो तो उसे अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिख लेंगे प्रस्तुति के पश्चात् त्रुटियों पर ध्यान आकर्षित करेंगे। समूह के छात्र यदि उस त्रुटि का निवारण करते हों तो उचित है अन्यथा अन्य समूह के छात्र भी उसका निवारण कर सकेंगे। जब तक सभी समूह के छात्र प्रस्तुति न कर लें। तब तक यही क्रम जारी रखा जावे। इससे छात्रों में शुद्ध उच्चारण क्षमता का विकास होगा छात्र वर्णों के उच्चारण स्थान को जान सकेंगे विशेषकर श ष स के उच्चारण को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

1.2. 12.संस्कृत के संधि व समास युक्त शब्दों को सरल कर कैसे बोध कराएँ।

संधि

दो शब्द जब पास–पास होते हैं तो एक दूसरे की निकटता के कारण पहले शब्द के अंतिम वर्ण में तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन अथवा विकार हो जाता है अर्थात् एक ही वाग्धारा में उच्चरित दो समीपस्थ ध्वनियों के परस्पर प्रभाव या विकार को संधि कहते हैं। जैसे – विद्यालयः। विद्या + आलयः इसमें विद्या की अंतिम ध्वनि आ और आलय की आदि ध्वनि आ का उच्चारण यदि एक ही वाग्धारा में किया जावे तो दोनों ध्वनियाँ प्रभावित या विकृत होकर मात्र आ रह जाती हैं , अतः यहाँ संधि है।

संधि के प्रकार
1. स्वर संधिः
2. व्यञ्जन संधिः
3. विसर्ग संधिः

संहितैकपदे नित्यानित्या धातूपसर्गयोः
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ।।

एक पद के भिन्न– भिन्न अवयवों में धातु और उपसर्ग में समास में संधि अवश्य करना चाहिये, वाक्य के अलग–अलग शब्दों के बीच में संधि करना या न करना वक्ता की इच्छा पर निर्भर है।

1.दीर्घ संधिः
2.गुण संधिः
3.वृद्धि संधिः
4.यण् संधिः
5.अयादि संधिः
6.पूर्णरूप संधिः
7.पररूप संधिः
8.प्रकृतिभाव संधिः

स्वर संधिः

गतिविधि :– 1. छात्र समूहों में बँटकर स्वर संधि के उदाहरणों का वाक्यों में व्यावहारिक प्रयोग करेंगे। इसके अन्तर्गत स्वर संधि के प्रकार को आधार मानकर प्रत्येक समूह केवल अपने समूह से संबंधित स्वर संधि के एक प्रकार का वाक्यों में व्यावहारिक प्रयोग प्रस्तुत कर सकेंगे। प्रत्येक समूह के छात्र श्यामपट पर स्वयं करेंगे। यह प्रक्रिया सभी समूहों के लिये लागू होगी।

उदाहरण के लिये – प्रथम समूह को दीर्घ स्वर संधि को वाक्य में व्यावहारिक प्रयोग करने का कार्य मिला हो तो इस प्रकार स्वर संधि के प्रकार को व्यावहारिक प्रयोग करेंगे।

1. सः विद्यालयं गच्छति।
2. मम नाम रामावतारः अस्ति।
3. सः गिरीशः अस्ति।

इन वाक्यों में प्रयुक्त संधि युक्त शब्दों को रेखांकित कर उसका विच्छेद करेंगे।

जैसे – विद्यालयः = विद्या + आलयः

यहाँ पर आ + आ = आ हुआ है इसे स्पष्ट करेगा।

2. छात्र समूह में बँटकर संधि के विभिन्न नियमों के आधार पर संधि को प्रस्तुत करेंगे।

व्यंजन संधि – जब किसी व्यंजन (हल्) का व्यंजन के साथ होने से ध्वनि में परिवर्तन होता है तो वहाँ व्यंजन संधि होती है।

उदाहरण – एतत् + टीका = एतट्टीका यहाँ पर त् पश्चात् ट आने पर त् का ट हो गया है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण बालस् + षष्ठः = बालष्षष्ठः यहाँ पर सकार के बाद षकार आने पर स् का ष हो गया है।

विसर्ग संधि – जब किसी विसर्ग का स्वर अथवा व्यंजन के साथ मेल होता व विकार होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

उदाहरण – पुरतः + अगच्छन्पुरत अगच्छन् यहाँ पर विसर्ग के पूर्व अ (त) और बाद में अ स्वर होने के कारण विसर्ग का लोप हो गया है।

इसी प्रकार छात्र समूह में बंट कर विसर्ग संधि के विभिन्न नियमों के आधार पर विसर्ग संधि को अन्य उदाहरणों को श्यामपट्ट पर प्रस्तुत करेंगे।

समास

दो या दो से अधिक पदों के संक्षेप को समास कहते हैं। समास के लिए कम से कम दो शब्दों का होना आवश्यक है। पहले शब्द को पूर्वपद और बाद वाले शब्द को उत्तर पद कहते हैं ये दोनों पद समर्थ होने चाहिए अर्थात् परस्पर एक दूसरे से सम्बद्ध होने चाहिए। समर्थ पदों का ही समास होता है असमर्थ का नहीं।

समास में पूर्व पद की विभक्ति का प्रायः लोप हो जाता है और विभक्ति के लोप होने से उसका आकार छोटा हो जाता है अर्थात् संक्षिप्त हो जाता है किंतु अर्थ वही रहता है।

उदाहरणार्थ –धनवार्ता का विग्रह हुआ धनस्यवार्ता।

सभायाः पतिः – सभापतिः (षष्ठी तत्पुरूष) इसमें षष्ठी विभक्ति का लोप होने से सभापति हो गया। किसी समस्त शब्द को तोड़ कर उसका पूर्वकाल का रूप दे देना विग्रह कहलाता है। विग्रह का अर्थ टुकड़े–टुकड़े करना है। इसलिये वह विग्रह है।

दो या दो से अधिक शब्दों का जब इस प्रकार संक्षेप करके उनका एक शब्द बनाया जायेगा तो प्रश्न उठता है कि उस समस्त शब्द में किसकी प्रधानता होगी? पूर्व पद की या उत्तर पद की?

इसका उत्तर यह है कि भिन्न–भिन्न समासों में भिन्न–भिन्न पदों की प्रधानता रहती है और इसी दृष्टि से सम्पूर्ण समास वाले शब्दों को चार भागों में बाँटा जा सकता है–

1. पूर्व पदार्थप्रधान – जहाँ पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता होती हो।

जैसे – यथाशक्ति, उपकुम्भम्

2. उत्तर पदार्थप्रधान – जहाँ उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता हो।

जैसे – सभापति, वीरपुरूषः

3. उभय पदार्थप्रधान – जहाँ पूर्व पद और उत्तर पद दोनों के अर्थो की प्रधानता हो।

जैसे – रामलक्ष्मणौ, युधिष्ठिरभीमार्जुनाः

4. अन्य पदार्थप्रधान – जहाँ पूर्व और उत्तर पद से भिन्न किसी अन्य पद के अर्थ की प्रधानता हो।

जैसे – नीलाम्बरः, दिगम्बरः

इन चार विभागों के कारण ही समास मुख्य रूप से चार प्रकार के माने जाते हैं–

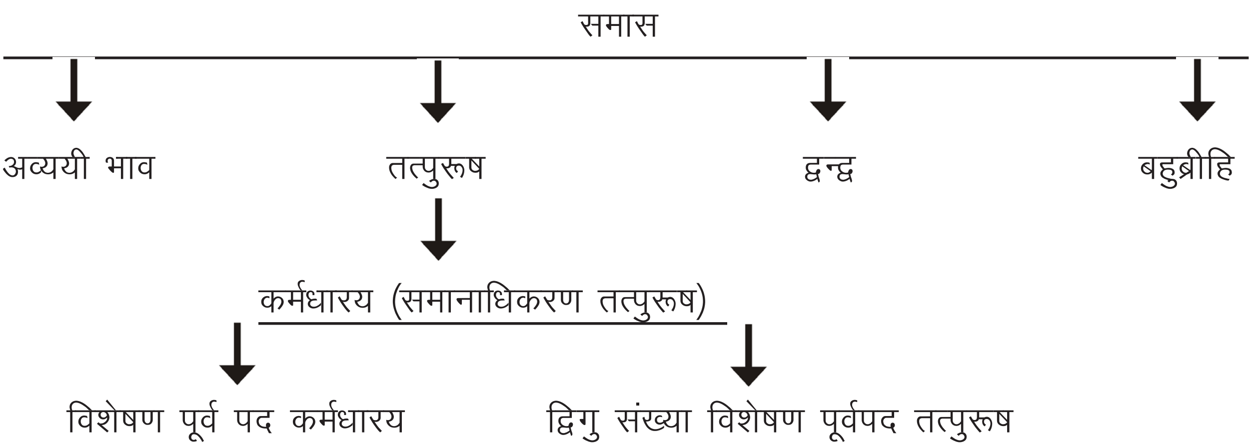

1. अव्ययी भाव समासः – इसमें पहला पद अव्यय या उपसर्ग होता है और वही प्रधान होता है। दूसरा पद संज्ञा होता है।

यथाशक्ति	–	शक्तिमनति क्रम्य इति
उपगंगम्	–	गगायाः समीपम्
प्रत्यहम्	–	अहः अहः
अन्तर्गिरिः	–	गिरिषु इति

2. तत्पुरूष समासः – उत्तरपद प्रधान होता है। प्रथम पद में द्वितीया से लेकर सप्तमी तक की विभक्तियाँ लगती है। यथा–

द्वितीया तत्पुरूष	–	कृष्णं आश्रितः	–	कृष्णाश्रितः
द्वितीया तत्पुरूष	–	दुःखम् अतीतः	–	दुःखातीतः
तृतीया तत्पुरूष	–	अग्निपतितः	–	अग्निना पतितः
तृतीया तत्पुरूष	–	हरिणा त्रातः	–	हरित्रातः
चतुर्थी तत्पुरूष	–	यूपाय दारू	–	यूपदारू
पंचमी तत्पुरूष	–	चौराद्भयम	–	चौरभयम्
षष्ठी तत्पुरूष	–	राज्ञः पुरुषः	–	राजपुरुषः
सप्तमी तत्पुरूष	–	प्रेम्णिधूर्तः	–	प्रेमधूर्तः
सप्तमी तत्पुरूष	–	सभायां पण्डितः	–	सभापण्डितः

टीप – तत्पुरूष समास के अंतर्गत दो समास आते हैं–

1. द्विगु   2. कर्मधारय

1. द्विगु – पूर्व पद संख्यावाची

यथा – पंचकुमारि

पंचचानां कुमारीणां समाहारः

अष्टाध्यायी

अष्टानाम् अध्यायां समाहारः

2. कर्मधारय – पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य हो।

उदा.– रक्तोत्त्पलम्

रक्तम् उत्पलम्

श्वेत वस्त्रम्

श्वेतं वस्त्रम्

3. द्वन्द्व समासः – इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। दोनों पद को जोड़ने के लिए च का प्रयोग किया जाता है।

रामश्च लक्ष्मणश्च	–	रामलक्ष्मणौ
रामश्च कृष्णश्च	–	रामकृष्णौ
माता च पिता च	–	पितरौ

4. बहुब्रीहि समासः – इसमें अन्य पद प्रधान होता है तथा दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की विशेषता बताते हैं।

पीतम् अबरम् यस्य सः – पीताम्बरम्

धनुः पाणौ यस्य सः – धनुष्पाणिः

चन्द्रः शेखरे यस्य सः – चन्द्रशेखरः

छोटे समूह में विभाजित होकर समास के विभिन्न नियमों के अनुरूप समास विग्रह करेंगे। छात्र समास के उपर्युक्त उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य उदाहरणों का संकलन कर नियमों को जान सकेंगे। प्रथम समूह अव्ययी भाव समास, द्वितीय समूह तत्पुरूष समास, तृतीय समूह द्वन्द्व समास तथा चतुर्थ समूह बहुब्रीही समास के नियमों को सोदाहरण प्रदर्शन कर सकेंगे।

14. बच्चों को संस्कृत कारकों का बोध कराते हुए वाक्य प्रयोग की अवधारणा को कैसे पुष्ट करें।

''क्रियाजनकत्वं कारकत्वं'' संस्कृत में वाक्य संरचना के लिए कारकों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। इसके अभाव में हम संस्कृत में शुद्ध वाक्य रचना नहीं कर सकते, अतएव संस्कृत के छात्रों को संस्कृत कारक का ज्ञान कराना आवश्यक है। यदि छात्र कारक एवं विभक्ति का सही प्रयोग करना सीख जाता है तो उन्हें संस्कृत वाक्य संरचना में सरलता होगी।

प्रश्न यह उपस्थित होता है कि छात्रों को व्यावहारिक एवं गतिविधि आधारित कारक एवं विभक्ति का ज्ञान करायें, तो छात्रों का ज्ञान पुष्ट होगा।

कारकों के आधार पर वाक्य प्रयोग की अवधारणा

क्रिया के संम्पादन में जिन शब्दों का उपयोग होता है, उन्हें कारक कहते हैं।

क्रिया का सम्पादक	–	कर्ता
क्रिया का कर्म	–	कर्म
क्रिया का संपादन (जिसके द्वारा हो)	–	करण
क्रिया जिसके लिए हो	–	सम्प्रदान
क्रिया जिससे दूर हो	–	अपादान
क्रिया जिस स्थान पर हो	–	अधिकरण

इस प्रकार छः कारक माने गये हैं।

संस्कृत में कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण यह छः कारक माने गये है। संबंध को कारक की श्रेणी में नहीं गिना जाता है किन्तु षष्ठी विभक्ति के प्रयोग में संबंध का उपयोग होता है।

उदाहरण –''राम के लड़के, मोहन को, श्याम ने पीटा''। इस वाक्य में पीटने की क्रिया से सीधा संबंध मोहन और श्याम से है, राम का कुछ भी संबंध मोहन और श्याम से नहीं है, अतएव ''राम के'' को कारक नहीं कहा जा सकता है। राम का संबंध मोहन से है, किन्तु पीटने की क्रिया के सम्पादन में राम का कोई संबंध नहीं है।

गतिविधि –अयोध्या के राजा दशरथ ने राजकोष से गंगा नदी के किनारे अपने हाथ से ब्राह्मणों के लिए धन दिया। (अयोध्यायाः राजादशरथः राजकोषात् धनं गंगातटे स्वहस्तेन विप्राय प्रयच्छत्)।

उपरोक्त उदाहरण में –

प्रथमा	एकवचन	दशरथः
द्वितीया	एकवचन	धनम्
तृतीया	एकवचन	स्वहस्तेन
चतुर्थी	एकवचन	विप्राय
पञ्चमी	एकवचन	राजकोषात्
सप्तमी	एकवचन	गंगातटे

''राजा दशरथ'' कर्ता का संबंध 'अयोध्या के' इस पद का क्रिया से कोई संबंध नहीं है। इसलिए यहाँ षष्ठी विभक्ति, कारक नहीं है। इसी उदाहरण को दूसरी गतिविधि के माध्यम से भी छात्रों को समझाया जा सकता है। तथा सीखने का मूल्यांकन भी किया जा सकता है।

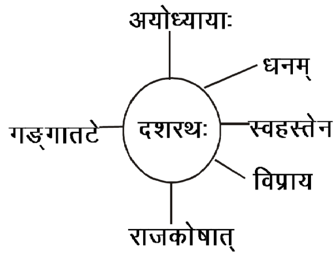

इस उदाहरण में छात्रों को समझाने के लिए गतिविधि बताई गई है, इसमें क्रिया की पूर्ति छात्र स्वयं करेंगे। इसके लिए छात्रों को छोटे–छोटे प्रश्न दिए जायेंगे और इस उदाहरण को छात्र स्वयं समझेंगे।

प्रश्नाः

1. दशरथः किं ददाति ?
2. केन ददाति ?
3. कस्मै ददाति ?
4. कस्मात् ददाति ?
5. कुत्र ददाति ?

इस तरह के प्रश्नों से छात्रों को कारक का ज्ञान सरलता पूर्वक हो सकता है।

15. क्रिया, पुरूष, काल व लिंग का प्रयोग क्रिया

संस्कृत में क्रियाओं का ज्ञान छात्रों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके ज्ञान के अभाव में छात्र संस्कृत अनुवाद करने में समर्थ नहीं हो सकते। संस्कृत में क्रिया, धातुरूप में व्यवहृत होता है। ये धातु रूप गणों के रूप में दशगणों में विभक्त हैं। जो इस प्रकार हैं –

भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, तनादि, क्रयादि, रूधादि एवं चुरादि गण श्लोक के रूप में इस प्रकार भी लिखा जा सकता है –

संस्कृत भाषा के प्रायः सभी शब्द, धातुओं से बनते हैं। संज्ञा, विशेषण, क्रिया, अव्यय इत्यादि सभी धातुओं से बनते हैं। धातु पाठ में कुल 18 से 80 धातुओं की गणना हैं। इन्हीं में प्रत्यय विशेष जोड़ कर संस्कृत भाषा के शब्द बने हैं। धातुओं में कृदन्त प्रत्यय जोड़कर संज्ञा, विशेषणादि बनते हैं। धातुओं से तिङ् प्रत्यय जोड़कर क्रियाएँ बनाई जाती है।

''भ्वाद्यादी, जुहोत्यादि, दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रूधादिश्च, तनादि क्रिचुरादयः।।

कुछ धातुएँ सकर्मक व कुछ अकर्मक होती हैं। क्रिया बनाने के लिए धातुओं के रूप तीन वाच्यों में होते हैं। सकर्मक धातुओं की क्रियाओं के साथ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य संभव होते हैं तथा अकर्मक धातुओं के साथ कर्तृवाच्य और भाववाच्य संभव होते हैं।

क्रियाओं के प्रयोग के संदर्भ में कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हो सकती है –

गतिविधि – संस्कृत में कुछ वाक्य लिखकर उन वाक्यों मे प्रयुक्त क्रियाओं को पहचानने के लिए छात्रों से कहा जा सकता है। यथा –

1. मोहनः धावति।
2. युवां क्रीडथः।
3. सः जलं पास्यति।
4. अहं पाठशालां गच्छामि।
5. सोहनःपुस्तकम् अपठत्।
6. सीता वनं गच्छति।
7. यूयं क्षेत्रं प्रति गच्छत।
8. पिता पुत्रेण सह अगच्छत्।
9. त्वं फलं खादसि।
10. त्वं पुस्तकं पठेः।

उपर्युक्त वाक्यों में जिन–जिन क्रियाओं का प्रयोग हुआ है उन्हें विद्यार्थियों को पृथक् से लिखने के लिए शिक्षक निर्देश करेंगे। साथ ही उन क्रियाओं के लकार एवं वचन का ज्ञान भी हो सकेगा। इसी प्रकार अन्य कोई गतिविधि शिक्षक छात्रों से करा सकते हैं, जिससे छात्रों में क्रिया ज्ञान की समझ विकसित हो सके।

पुरूष

संस्कृत में शुद्धानुवाद करने के लिए कर्ता के पुरूष का ज्ञान आवश्यक है। यदि छात्र को पुरूष का सही ज्ञान नहीं होगा तो वह वाक्य के कर्ता के साथ सही लकार का प्रयोग नहीं कर सकेगा। अतएव पुरूष का ज्ञान छात्रों के लिए नितान्त आवश्यक है। इसे सरल रूप से पहचानने का तरीका यह है कि यदि वाक्य में अस्मद् शब्द का रूप अहम् आवां वयम् से लेकर मयि आवयोः अस्मासु का प्रयोग हुआ हो तो वाक्य का कर्ता उत्तम पुरूष में होगा। उसी प्रकार यदि वाक्य में युष्मद् शब्द का प्रयोग त्वं युवां यूयम् से त्वयि युवयोः युस्मासु व्यवहृत हुआ हो, तो वाक्य का कर्ता मध्यम् पुरूष का होगा। इन दोनों के अतिरिक्त वाक्य में जो भी प्रयोग होगा वह अन्य पुरूष के अन्तर्गत आयेगा। छात्रों को विभिन्न पुरूषों से संबंधित वाक्य देकर उसमें वाक्य के कर्ता में पुरूष पहचानने के लिए शिक्षक निर्देशित करेंगे। जैसे –

पुरूष

संस्कृत में तीन पुरूष माने जाते हैं उत्तम पुरूष मध्यम पुरूष एवं अन्य पुरूष! स्वयं के लिए
मैं –उत्तम पुरूष–अस्मद् शब्द रुप
तुम–मध्यम पुरुष–युष्मद् शब्द रूप
वह–अन्य पुरूष–सः

1. आवां पाठशालां गच्छावः।
2. यूयं पुस्तकं पठथ।
3. ताः क्रीडन्ति।
4. वयं फलानि खादामः।
5. अहं जलं पास्यामि।
6. तौ कन्दुकं क्रीडतः।
7. सः गृहं गच्छेत्।
8. युवाम् ओदनम् अखादतम्।
9. त्वं कुत्र गच्छसि।
10. रमा विद्यालयं गच्छति।

उपर्युक्त वाक्यों में जिस–जिस पुरूष का प्रयोग हुआ है उसे अलग से पहचान कर छात्रों को लिखने के लिए कहें, इससे छात्रों में पुरूष का ज्ञान स्थायी रूप से हो सकेगा। इस तरह के प्रयोग शिक्षक कक्षा में बार–बार कराएँ तो निश्चय ही छात्र पुरूष ज्ञान को स्थायी रूप से आत्मसात् कर सकेंगे तथा उसे किसी भी वाक्य में कर्ता के पुरूष को पहचानने में कठिनाई नहीं होगी।

काल

आचार्य पाणिनि के व्याकरण में इन कालों का बोध कराने के लिए मिलते हैं तथा ये सब ल् से आरंभ होने के कारण इनको लकार कहते हैं। जो इस प्रकार है –

1. वर्तमान काल – लट्लकार
2. आज्ञार्थक काल – लोट्
3. विध्यर्थ काल – विधिलिङ्
4. अनद्यतन भूत – लङ्
5. परोक्ष भूत – लिट्
6. सामान्य भूत – लुङ्
7. अनद्यतन भविष्य – लुट्
8. सामान्य भविष्य – लृट्
9. आशीः – आशीर्लिङ्
10. क्रियादिपत्ति – लृङ्

> **काल**
>
> काल, समय के परिवर्तन को सूचित करता है। यह वर्तमान भूत एवं भविष्य की क्रियाओं को स्पष्ट करने में सहयोगी है। संस्कृत में मूलधातुओं से भिन्न–भिन्न काल तथा वृत्तियों के लिए अनेक रूप बनते है, उनको लकार कहते हैं। इन लकारों के आधार पर संस्कृत में 10 लकार (वृत्तियाँ) है।

यथा – 1. लट्लकार – वर्तमान काल की क्रिया का बोध कराने के लिए लट्लकार का प्रयोग करते हैं, जैसे – सः गच्छति , वयं कुर्मः आदि।

2. लोट्लकार (आज्ञार्थक) – आज्ञा देने का प्रयोग करने के लिए लोट्लकार का प्रयोग करते हैं।

जैसे – त्वं पाठशाला गच्छ, सः करोतु, अहं करवाणि आदि।

3. विधिलिङ्ग (विध्यर्थ) – विधिलिङ्ग का प्रयोग किन्हीं को नम्र आदेश (चाहिए अर्थ में) देने के लिए होता है, जैसे – सः कुर्यात्, तौ कुर्यातम्, ते कुर्युः।

4. लङ्लकार (अनद्यतन भूत) – ऐसा भूतकाल जो आज न हुआ हो अर्थात् इस काल के रूप में ऐसी दशा में प्रयोग मे लाये जाने चाहिए, जैसे – सः अद्य पठितुम् अगच्छत्। वह आज पढ़ने गया।

5. लिट् (परोक्षभूत) – जो अतीत काल में जो आँखों के सामने न हुआ, जैसे – सः पाठशाला जगाम। वह पाठशाला गया।

6. सामान्य भूत (लुङ्) – सामान्य भूत सब जगह में प्रयोग में लाया जा सकता है, चाहे क्रिया आज समाप्त हुई हो या बरसों पहले। क्रिया के अन्त में स्म शब्द जोड़कर वाक्य बनाया जाता है। जैसे – कश्चित् राजा प्रतिवसति स्म। (कोई राजा रहता था)। किन्तु लकारों में ''कश्चित् राजा आवात्सीत्'' होगा।

7.लुट् (अनद्यतन भविष्य) – भविष्यकाल की क्रिया का बोध कराने के लिए पहले का प्रयोग ऐसी दशा में नहीं हो सकता है, जब क्रिया आज हो। उदा. तौ गन्तारौ (वे दोनों आज जायेंगे)।

8. लृट् (सामान्य भविष्य) – क्रिया की होने का सब जगह प्रयोग हो सकता है। जैसे –
उदा. – रमा गमिष्यति। (रमा जायेगी)

9. आशीलिंङ् (आशीः) – इसका प्रयोग आशीर्वादात्मक होता है, जैसे – तुम सौ वर्ष तक जीओ– त्वं जीन्याःशरदां शतम्।

10. लृङ् (क्रियातिपत्ति) – जहाँ एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर हो, जैसे – यदि सः आगमिष्यति तर्हि अहं तेन स गमिष्यामि। (यदि वह आता है तो मैं भी उसके साथ जाऊँगा।)

इस प्रकार शिक्षक विभिन्न लकारों से संबंधित उदाहरणों से छात्रों को काल का समुचित ज्ञान करा सकते हैं।

लिङ्ग

संस्कृत में सारी संज्ञाओं को तीन लिङ्गों में विभक्त किया गया है–

1. पुँल्लिङ्ग
2. स्त्रीलिङ्ग
3. नपुंसकलिङ्ग

संस्कृत में लिङ्ग प्रकृति के अनुसार नहीं होता है जैसे – तनुः (स्त्रीलिङ्ग), देह (पुल्लिङ्ग), और शरीरम् (नपुंसकलिङ्ग), सभी शरीर का बोध कराने वाले हैं।

सारे अचेतन पदार्थवाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग में, पुरूषवाची पुँल्लिङ्ग में और स्त्रीवाची स्त्रीलिङ्ग में हैं तो कहा जा सकता कि लिङ्ग प्रकृति के क्रम से है। किन्तु बात इसके विपरीत होने के कारण संस्कृत की संज्ञाओं का लिङ्ग जानना कठिन है, उसका ज्ञान कोशों से तथा काव्य ग्रन्थों के अध्ययन से ही जाना जा सकता है।

> हिन्दी भाषा में दो लिङ्ग होते हैं स्त्रीलिङ्ग पुँल्लिङ्ग जैसे –लड़की जाती है लड़का जाता है इत्यादि। संस्कृत में इन दो लिङ्गों के अतिरिक्त एक और लिङ्ग होता है, जिसे नुपंसक लिङ्ग कहते है।

विषय अध्यापक विभिन्न संज्ञा शब्दों को श्यामपट में लिखकर छात्रों को उनका लिङ्ग निर्धारण करने हेतु निर्देशित करें जिससे छात्रों में लिङ्गों का ज्ञान सुस्पष्ट हो सके –

उदाहरणार्थ – अवनि, भूमिः, ग्लानिः, कविः, अग्निः, भरणि, अरणि, विद्या, अजा, श्रीः, पाकः, त्यागः, गोचरः, गतम्, सख्यम्, चातुर्यम्।

इन शब्दों को क्रम से पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग में लिखने हेतु कहें। इसी प्रकार अन्यान्य शब्दों का उदाहरण देकर छात्रों को लिङ्ग ज्ञान का अभ्यास करावें।

15. सरल संस्कृत में वाच्य परिवर्तन कैसे कराएँ

वाच्यः

वाच्य किसे कहते हैं?

वाच्य का अर्थ है जिसको बताया जाय। अर्थात् क्रिया जिसे बताए, उदाहरण– रामः फलं खादति।

वाक्य कहने पर यदि हम प्रश्न करें कि कौन फल खाता है (कः फलं खादति) तो इसका उत्तर होगा – रामः

यहाँ क्रिया खादति का कर्ता राम है।

अतः यह क्रिया कर्तृ वाच्य में है

मया चित्रकूटः दृश्यते वाक्य में दृश्यते क्रिया का अर्थ है – दिखाई दे रहा है '' देखा जाता है''।

अब यदि पूछा जाये कः दृश्यते – कौन दिखाई दे रहा है। तो उत्तर होगा – चित्रकूटः

परन्तु यह सभी जानते हैं, कि देखने वाला है अहम् अर्थात मैं और जो देखा जा रहा है चित्रकूट अर्थात् कर्म इसलिए दृश्यते क्रिया कर्म को बता रही है। यह कर्म वाच्य है। ऐसा भी होता है वाक्य में जिनमें कोई भी नहीं होता

जैसे –

वह हँसी – सा अहसत्

वह सोता है – सः स्वपिति

इन क्रियाओं का जब वाच्य बदलता है तो ये क्रियाएँ सब लकारों में केवल प्रथम पुरूष के एकवचन में प्रयुक्त किए जाते है और ऐसी क्रियाओं को भाव वाच्य क्रियाएँ कहते हैं।

जैसे – कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
सः हसति	तेन हस्यते
सः स्वपिति	तेन सुप्यते
जनाः चलन्ति	जनैः चल्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते

संस्कृत में वाच्य 3 होते हैं – कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**	**भाव वाच्य**
1. कर्ता मुख्य होता है 2. क्रिया कर्ता के अनुसार चलती है 3. कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया **उदा.** 1. सः हसति।	1. कर्म मुख्य होता है। 2. कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरूष,वचन,लिंङ्ग होगा। 3. कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा क्रिया कर्म के अनुसार मया फलं खाद्यते	1. कर्म होगा ही नहीं 2. कर्ता में तृतीया 3. क्रिया में प्रथम पुरूष का एकवचन होगा। तेन हस्यते

वस्तुतः जिन क्रियाओं के कहने से क्या ? किसे ? किसको ? आदि से संबंधित कोई जिज्ञासा नहीं उठती, वे क्रियाएँ अकर्मक अर्थात् कर्महीन होती है। जैसे – अहं तिष्ठामि।

हमेशा ध्यान रखें कि कर्मवाच्य क्रिया का कर्ता तृतीया, कर्म में प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होता है। क्रिया का संबंध कर्ता से हटकर कर्म में साथ जुड़ जाता है। जैसे –

1. मोहन फलं खादति – मोहनेन फलं खाद्यते
2. अहं फलं खादामि – मया फलं खाद्यते
3. त्वं फलं खादसि – त्वया फलं खाद्यते

1. तेन फलं खाद्यते
2. तेन फले खाद्येते
3. तेन फलानि खाद्यन्ते

आपने कर्मवाच्य और भाववाच्य क्रियाओं को देखा। बताइये ये कौन से पद में है। ये सभी क्रियाएँ आत्मने पद में है। कर्मवाच्य और भाववाच्य की सभी क्रियाएँ आत्मने पद में ही प्रयुक्त की जाती है। प्रायः इन सभी धातुओं में ''य'' जोड़ा जाता है।

लभते – लभ्यते
पिबति – पीयते
पश्यति – दृश्यते
तिष्ठति – स्थीयते

गतिविधिः– वाच्यः कः? क्रियां बोधयति तत् वाच्यः।

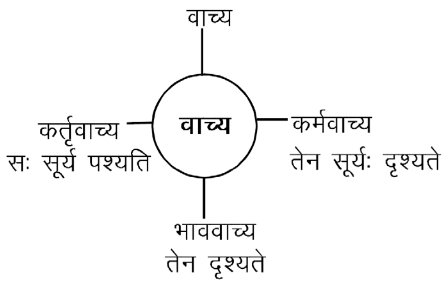

16. गद्य एवं पद्य शिक्षण में आए अव्यय एवं उपसर्गों का बोध

भूमिका –

संस्कृत भाषा में गद्य एवं पद्य शिक्षण की अनेक विधियाँ हैं। यथा – स्वरोच्चारण, व्याख्या, कहानी कथन, ध्वनि साम्य, अनुकरण, अनुवाद, शब्दपूर्ति, समवाय, चित्र वर्णन, सुनो और बोलो एवं अभ्यास विधि आदि। सभी विधियों की अध्यापन शैली अलग–अलग है।

संस्कृत गद्य–पद्य शिक्षण में सर्वप्रथम शिक्षक आदर्श (सस्वर) वाचन करता है पश्चात् विद्यार्थी अनुकरण वाचन करते हैं। ताकि छात्रों की कमियों का पता लग सके एवं पाठांश में आए कठिनाइयों को दूर कर सकें। विशेष कर काव्य शिक्षण में छात्रों को आरोह अवरोह आदि का ज्ञान आवश्यक होता है जिससे विद्यार्थी सस्वर वाचन करते हैं तथा श्लोकों के भाव को समझते हैं।

उद्देश्य :–

1. शुद्धोचारण के साथ पढ़ना सिखाना।
2. आरोह–अवरोह के साथ गद्य–पद्य के वाचन क्षमता का विकास।
3. भावार्थ समझने की क्षमता विकसित करना
4. व्याकरणिक ज्ञान का विकास।
5. शब्द भण्डार में वृद्धि।
6. आज के परिवेश के साथ संबंधित पाठांश को जोड़ना।
7. काव्य सौन्दर्य की अनुभूति कराना।
8. कल्पना एवं तर्क शक्ति का विकास।
9. संस्कृत भाषा के प्रति रूचि जागृत करना।
10. संस्कृत भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।

गद्यांश

इदम् अस्माकं रायपुरनगरं खारूननद्याः तटे स्थितम्। अस्य नगरस्य महत्वं प्राचीन कालादेववर्तते। इयं नगरी तडागानां नगरी इति कथ्यते। अत्र अष्टादशाधिकाः तडागाः सन्ति। इयम् नगरी छत्तीसगढ़ क्षेत्रस्य संस्कारधानी इति अभिधीयते।

अत्र विवेकानन्द सरोवरः अस्ति। सरोवर समीपे एकम् उद्यानम् अस्ति। उद्याने विविध वृक्ष लताः जनानां मनांसि रञ्जयन्ति।

श्लोकाः

1. **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते**
   रमन्ते तत्र देवताः।
   यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते
   सर्वास्तत्राफलाक्रियाः ।।
2. **विहाय कामान्यः सर्वान्युमां श्चरति निःस्पृहः।**
   निर्गमो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।।
3. **पत्रं पुष्पं फलं तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति।**
   तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

उदाहरण में दिए गए गद्यांश का छात्र आरोह– अवरोह का ध्यान रखते हुए तथा ध्वनि का उपयुक्त उच्चारण करते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन कर सके जिससे उनमें गद्य पठन क्षमता का विकास हो सके।

इसी तरह उदारणार्थ दिए गए श्लोक का सस्वर वाचन करते हुए, आरोह–अवरोह का उचित ध्यान रखते हुए श्लोक का वाचन करेंगे इससे छात्रों में श्लोक वाचन क्षमता का विकास होगा। त्रुटि रहित पठन कौशल की क्षमता छात्रों में विकसित होगी। वे श्लोकों का सस्वर एवं आनंददायी पूर्ण पठन करने में समर्थ हो सकेंगे।

इस प्रकार छात्रों को गद्य एवं पद्य पठन का निरंतर अभ्यास कक्षा शिक्षण में विषय शिक्षक द्वारा कराया जावें।

गद्य एवं पद्य में आए हुए उपसर्ग एवं अव्यय से संबंधित शब्दों का प्रयोग उन्हें कराया जावे ताकि छात्र उपसर्ग एवं अव्यय से परिचित हो सके।

उपसर्ग से संबंधित गतिविधि

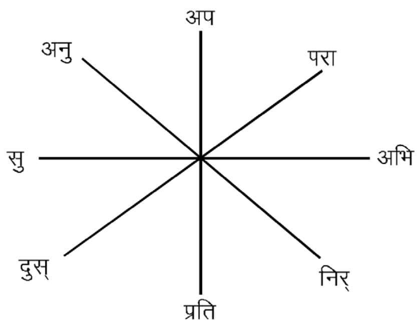

धातु या धातु से बने हुए विशेषण जो संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उनको उपसर्ग कहते है।

उपर्युक्त उपसर्गों को आधार मानकर दो–दो सार्थक शब्द बनाने हेतु छात्रों को शिक्षक निर्देशित करेंगे। इसके उदाहरणार्थ शिक्षक स्वयं किसी एक या दो उपसर्ग से शब्द बनाकर छात्रों को समझाये जिससे छात्र समझकर शब्द निर्माण कर सकेंगे यथा :–

वि – विचलः, वियोगः

निस् – निस्सार, निःशुल्क

छात्रों को इस तरह का अभ्यास निरन्तर कराने से उनमें उपसर्ग का ज्ञान पुष्ट होगा। छात्रों को उपसर्ग से संबंधित इस श्लोक को कण्ठस्थ करने हेतु भी शिक्षक प्रेरित करेंगे।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
प्रहाराहार संहार विहार परिहारवत् ।।

अव्ययम्

अव्यय ऐसे शब्द को कहते हैं जिसके रूप में कोई विकार न उत्पन्न हो। सदा एक सा रहे। जो लिङ्ग, विभक्ति, वचन के अनुसार घटे–बढ़े नहीं अर्थात् उसमें कोई परिवर्तन न हो, वही अव्यय है। ''न व्ययति इति अव्ययम्''

अव्यय के प्रकार – अव्यय चार प्रकार के होते हैं –

1. उपसर्ग 2. क्रियाविशेषण 3. समुच्चय बोधक शब्द 4. मनोविकार सूचक शब्द। इनके अतिरिक्त प्रकीर्णक

1. उपसर्ग संबंधी शब्द – अपिधानम्, अनुगमनम् आदि
2. क्रियाविशेषण – अकस्मात्, अग्रतः, अलम्, कच्चित् आदि
3. समुच्चय बोधक – च, अथच, तु आदि।
4. मनोविकार सूचक – इनका वाक्य से कोई संबंध नहीं होता।

उदाहरण **किम् धिक्, अयि, अरे, हा, हन्त आदि**

प्रकीर्णक – अधुना, तर्हि, सद्यः आदि।

शिक्षक कक्षा शिक्षण में गद्य या पद्य अध्ययन कराते समय छात्रों को उसमें आये हुए अव्यय शब्दों को पहचान करने हेतु निर्देशित करेंगे, जिससे छात्रों को अव्यय शब्दों का ज्ञान स्पष्ट हो सके, ताकि कक्षा शिक्षण आनंददायी हो सके।

17. सरल संस्कृत में कृदन्तों का व्यावहारिक प्रयोग कैसे कराएँ

कृदन्त विचार

धातुओं के अन्त में लगाकर जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण और अव्यय के वाचक शब्दों को बनाते हैं वे प्रत्यय कृत प्रत्यय कहे जाते हैं और उनके योग से बने शब्द को कृदन्त कहते हैं। जैसे उदारणार्थ 'कृ' धातु से 'तृच्' प्रत्यय जोड़कर 'कर्तृ' शब्द बनता है। यहाँ तृच् कृत् प्रत्यय है एवं कर्तृ कृदन्त है।

संज्ञा होने के कारण इसके रूप अन्य संज्ञाओं के तुल्य विभक्तियों में यह चलते हैं।

कर्तृ वाच्य में कृदन्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं तथा कर्म वाच्य मे कर्म के विशेषण और भावमय में नपुंसकलिङ्ग में एकवचनान्त प्रयुक्त होते हैं। जो कृदन्त अव्यय होते हैं वे एक रूप रहते हैं। उदाहरणार्थ क्त्वा लगाकर गत्वा बनने पर यह सदा एक रूप रहेगा।

कभी–कभी कोई कृदन्त भी क्रिया का काम देते हैं। यथा–सः गतः (वह गया) में गतः शब्द। यथार्थ रूप में क्रिया विशेषण है। इस वाक्य में क्रिया छिपी हुई हैं। कृत् प्रत्ययों के मुख्य तीन भेद है।

कृत् प्रत्ययाःसप्त

तव्यत्, तव्य, अनीयर, केलिमर, यत्, क्यप्, ण्यत्

उपर्युक्त प्रत्यय सदा भाववाच्य और कर्मवाच्य में ही प्रयुक्त होते हैं। कर्तृवाच्य में नहीं हैं।

1.वर्तमान कालिक कृदन्त

शतृ – शानच् प्रत्यय

परस्मै पद –

शतृ प्रत्यय

(अ)बालकः कार्यं कुर्वन् हसति

↓

(ब) बालिका हसन्ती गच्छति

–

आत्मनेपद –

शानच् प्रत्यय

(पु.) छात्रः गुरूं सेवमानः मोदते।

(स्त्री) बालिका विद्यालये मोदमाना पठ्यते।

2. भूतकालिक कृदन्त – (त) (क्तवतु) प्रत्यय भूतकाल को प्रगट करता है।

जैसे – गम – धातु से क्त (त) प्रत्यय लगाने पर गतः यह रूप होगा और क्तवतु (तवत्) यह प्रत्यय लगने पर गतवान् यह रूप होगा।

भूतकाल के चार भेद हैं

1. सामान्य भूतकाल – सः पठितवान् (उसने पढ़ा)
2. पूर्ण भूतकाल – सः पठितवान् आसीत् (उसने पढ़ा था)
3. आसन्न भूतकाल – सः पठितवान् अस्ति (उसने पढ़ा है)
4. संदिग्ध भूतकाल – सः पठितवान् भवेत् (उसने पढ़ा होगा)

3. भविष्यत् कालिक कृदन्त – भविष्यतकालिक लृट्लकार के स्थान पर स्य (ष्य) विकरण प्रत्यय लगाकर क्रमशः शतृ और शानच् प्रत्यय द्वारा परस्मैपद और आत्मनेपद का बोध किया जाता है।

परस्मैपद– शतृ प्रत्यय का प्रयोग
सः पठिष्यन् (वह पढ़ने वाला है)
सा पठिष्यन्ती (वह पढ़ने वाली है)

आत्मनेपद– शानच् प्रत्यय का प्रयोग
सः पठिष्यमानः (वह पढ़ने वाला है)
सा पठिष्यमाना (वह पढ़ने वाली है)

4. पूर्व कालिक कृदन्त – (क्त्वा, ल्यप्, प्रत्यय का प्रयोग)

वाक्य में एक क्रिया के समाप्त होने पर दूसरी क्रिया आती है, तब पूर्व कालिक कृदन्त होता है। क्रिया को प्रगट करने के लिये क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

जैसे – वह पढ़ कर खायेगा। सः पठित्वा खादिष्यति। यदि कोई उपसर्ग पूर्व में रहे तो क्त्वा को ल्यप् हो जाता है।

यथा – सः प्रपठ्य खादिष्यति।
सः पठित्वा खादिष्यति।

5. उत्तरकालिक कृदन्त – (तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग)

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग किसी निमित्त पर हेतु वाचक कृ गम् आदि धातुओं की सहायता से प्रगट होता है।

यथा – कर्त्तुमिच्छति , गन्तुमिच्छति
1. सः गन्तुमिच्छति
2. रामः कर्त्तुमिच्छति

6. तव्यत् –तव्य – अनीयर (अनीय) (भाव व कर्मवाच्य में प्रयुक्त होते हैं)

सकर्मक धातु – कर्मवाच्य

एकवचन में — मया पुस्तकं पठितव्यम्। (मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए)

द्विवचन में — मया पुस्तके पठितव्ये। (मुझे दो पुस्तकें पढ़नी चाहिए)

बहुवचन में — मया पुस्तकानि पठितव्यानि। (मुझे पुस्तकें पढ़नी चाहिए)

अकर्मक धातु भाववाच्य

मया गन्तव्यम्।	मुझे जाना चाहिये।
युष्माभिः गन्तव्यम्।	तुम सब को जाना चाहिये।
त्वया गन्तव्यम्।	तुम्हें जाना चाहिए।

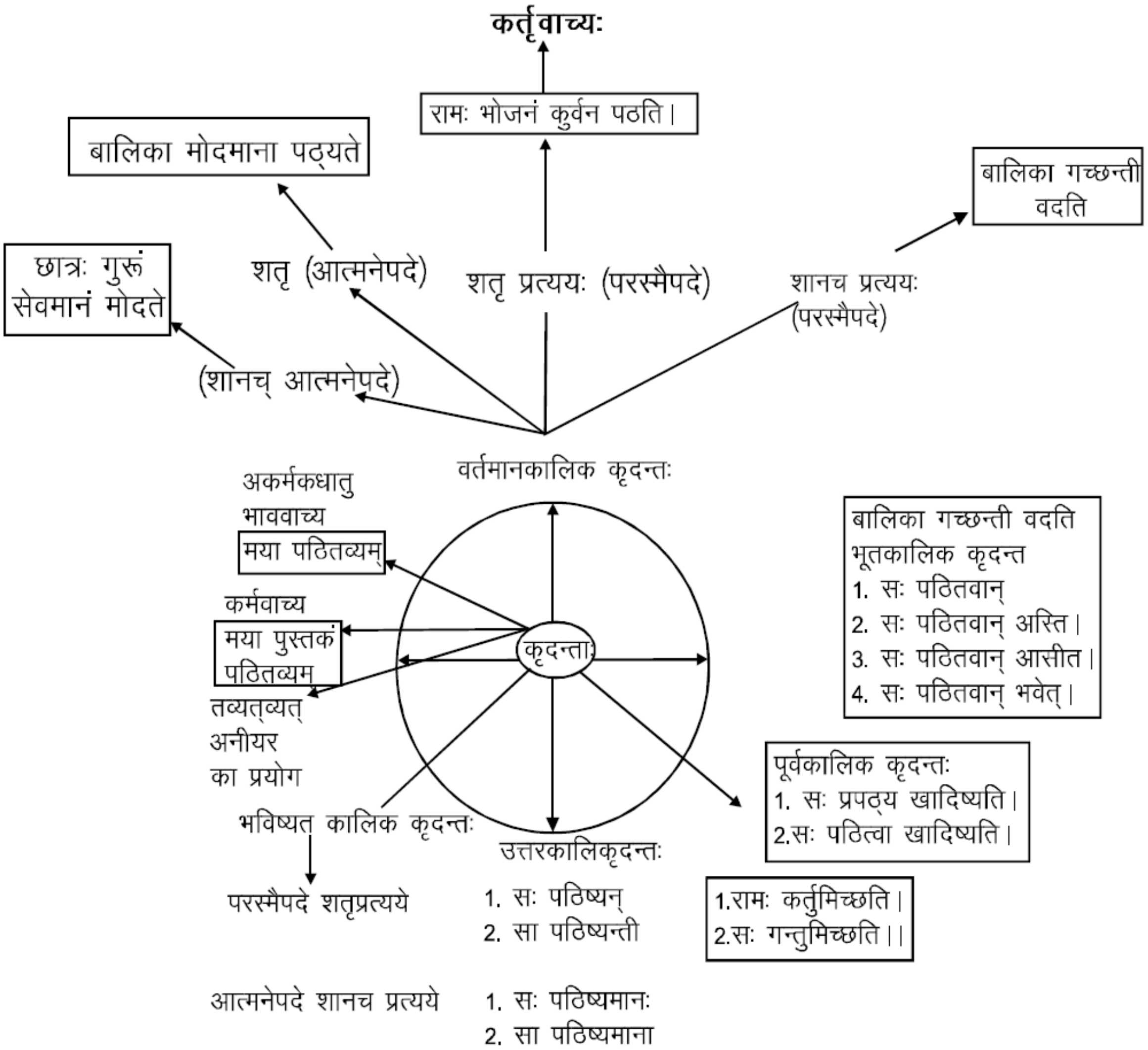

इकाई — 4
छन्द

श्लोक लिखते समय वर्णो की एक निश्चित व्यवस्था रखनी पड़ती है यह व्यवस्था छंद या वृत्त कहलाती है।

प्रायः प्रत्येक श्लोक में चार भाग होते हैं, जो पाद या चरण कहलाते हैं।

छन्द की व्यवस्था वर्णों पर आधारित रहती है मुख्यतः स्वर वर्ण पर। ये वर्ण छंद की दृष्टि से दो प्रकार के होते है लघु और गुरू। सामान्यतः ह्स्व स्वर लघु होता है और दीर्घ स्वर गुरू किंतु कुछ परिस्थितियों में ह्स्व स्वर लघु न होकर गुरू भी माना जाता है गुरू एवं लघु के लिए अधोलिखित चिह्न प्रयुक्त होते है—

गुरू — S

लघु — I

	I	I	I	I	I
ह्स्व स्वर —	अ	इ	उ	ऋ	लृ
	S	S	S	S	
दीर्घ स्वर —	आ	ई	ऊ	ॠ	
	S	S	S	S	
संयुक्त —	ए	ऐ	ओ	औ	

19. मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का कैसे बोध कराएँ :—

शब्द तथा मात्रा के नियमों से युक्त अभिव्यक्ति को छन्द कहा जाता है। छन्द का अर्थ ....छन्दयति (आह्लादयति) इति छन्दोऽथवा छन्द्यतेऽनेनेति छन्दः। (छन्दः पादौ तु वेदस्य) छन्द में लय, गति, आरोह—अवरोह आदि होता है।

छन्द दो प्रकार के होते हैं —

1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द

जहाँ मात्राओं की गिनती की जाती है, उसे मात्रिक छन्द एवं जहाँ वर्ण या अक्षर की गणना की जाती है उसे वर्णिक छन्द कहते हैं।

सर्वप्रथम छात्रों को सरलतापूर्वक मात्रिक छन्द का बोध कराने के लिए उन्हें उदाहरण में मात्रा लगाने के नियम का अभ्यास कराना चाहिए यथा :—

अधरः किसलयरागः कोमलविटमानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।।

इसी प्रकार अन्य उदाहरणों को लिखकर मात्रा लगाने के लिए प्रेरित करें, जिससे मात्रिक छन्द में सही ढ़ंग से मात्रा लगाना सीख सकेंगे।

इसी तरह वर्णिक छन्द का ज्ञान भी सरलता पूर्वक कराने के लिए उदाहरण के लिए वर्ण की गिनती करने के लिए अभ्यास दिया जा सकता है।

उदाहरण — यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

उक्त उदाहरण अनुष्टुप छन्द का है। इसके प्रत्येक चरण का पंचम वर्ण लघु होता है, द्वितीय तथा चतुर्थ चरण का सप्तम् वर्ण भी लघु होता है। इसके प्रत्येक दिये गये उदाहरण को विद्यार्थियों के द्वारा चिन्हांकित करने के लिए शिक्षक निर्देशित करेंगे।

अधिकाधिक उदाहरणों का संकलन करने हेतु विषय शिक्षक छात्रों को प्रेरित करेंगे जिससे छात्र मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का ज्ञान सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकें।

20. उपेन्द्रवज्रा,द्रुतविलम्बित तथा वसंततिलका छन्दों का ज्ञान बच्चों को कैसे कराएँ।

छात्रों को उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित तथा वसन्ततिलका छन्दों का ज्ञान पहले उन छन्दों के लक्षण बताने के पश्चात् उसके उदाहरण के माध्यम से लक्षण के अनुकूल वर्णों का चिन्हांकन कर कराना चाहिए इससे विद्यार्थी सरलता एवं मनोयोगपूर्वक समझने का प्रयास करेंगे।

लक्षण को सूत्रात्मक शैली में ज्ञान कराने से यह कार्य और अधिक आसान हो जाता है।

1. उदाहरणार्थ उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण इस प्रकार बताया जा सकता है –

1. उपेन्द्रवज्राः–''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ''अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरू होते हैं।

उदाहरण–

जितो जगत्येष भवभ्रमस्तैर्गुरूदितं ये गिरिशं स्मरन्ति।
उपास्यमानं कमलासनाद्यैरूपेन्द्रवज्रायुधवारिनाथैः।।

2. द्रुतविलम्बित–''द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ'' अर्थात् द्रुतविलम्बित के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से 12 अक्षर होते है।

1. जनपदे न गदः पदमादधौ।
2. उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते।
3. किं दधौ वड्वा वडवानलात्।

उक्त उदाहरण लक्षण के अनुसार है छात्रों को उसके लक्षण के अनुसार वर्णगणना करने हेतु अभ्यास कराया जावे।

3. वसंततिलका – ''उक्ता वसंततिलका तभजा जगौ गः'' अर्थात् वसन्ततिलका के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण और गुरू के क्रम से 14 वर्ण होते हैं।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।

उक्त उदाहरण में लक्षणानुसार वर्ण की गणना छात्र कर सकते हैं।

वर्णों की गणना सिखाने के पहले छात्रों को गण के बारे में अवश्य ही जानकारी प्रदान की जावे, साथ ही मात्रा गिनने के नियम से परिचित कराया जाये, तो छात्र आसानी से मात्रा तथा गण के अनुसार वर्णों को गिनने में सक्षम हो सकेंगे। अतएव विषय शिक्षक को छन्द सम्बन्धी ज्ञान कराने के पहले उक्त प्रकरणों का अध्ययन कराना आवश्यक होगा। ताकि मात्राओं की गणना एवं प्रत्येक गण की मात्राओं से भी अवगत हो सकेगे? जिससे इसका लाभ उन्हें छन्दों के अध्ययन में अवश्य प्राप्त होगा।

अलंकार

अलंकरोति इति अलडकारः अर्थात् जो अलंकृत करे वही अलंकार है।

अलंकार शब्द अलम् और कार इन दो शब्दों से मिलकर बना है। अलम् अर्थात् भूषण और कार अर्थात् करने वाला। इस तरह कहा जा सकता है काव्य को शोभित करने वाले धर्मों को अलंकार करते है।

प्रकार

शब्द और अर्थ के संयोग से ही काव्य बनता है। इसका अर्थ हुआ शब्दों में चमत्कार अर्थ में चमत्कार अथवा दोनों में चमत्कार। इस प्रकार अंलकार के भेद/प्रकार हैं–

1. शब्दालंकार – जहाँ केवल शब्दों में चमत्कार हो।
2. अर्थालंकार – जहाँ अर्थ में चमत्कार हो।
3. उभयालंकार – जहाँ शब्द व अर्थ दोनों में चमत्कार हो।

अलंकार

शब्दालंकार

अनुप्रास, यमक, श्लेष

छेकानुप्रास
वृत्यानुप्रास
क्षुत्यानुप्रास
लाटानुप्रास
अनन्त्यानुप्रास

अर्थालंकार

रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा

उभयालंकार

1. <u>अनुप्रास अलंकार</u> :– जहाँ पर स्वर भिन्न होते हुए भी वर्णों का साम्य हो अथवा निरर्थक एवं सार्थक वर्णों की एक या कई बार आवृत्ति हो वहाँ पर अनुप्रास अलंकार होता है।

अनुप्रास अलंकार के भेद –

1. छेकानुप्रास
2. वृत्यानुप्रास
3. श्रुत्यानुप्रास
4. अन्त्यानुप्रास
5. लाटानुप्रास

उदाहरण –

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरापि जननी जठरे शयनम् '
इह संसारे खलु दुस्तारे
कृपया पारे पाहि मुरारे।।

यमक – एक ही शब्द की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण –

नवपलाश–नवपलाशवनंपुरः
स्फुट पराग परागतपंकजम्।
मदुहलि – तान्त तलान्तमलोकपत् स्म
स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।

श्लेष – जब एक ही शब्द केवल एक बार प्रयुक्त होता है और उसके दो या अधिक अर्थ निकलते हैं, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण –

मंचः कोशति किमहो प्रयासि नमां परावृत्य।
किं कातरत यैवं युह्यैति मंचः किमांलपति ।।

विषय शिक्षक अपनी कक्षा शिक्षण में छात्रों को अलंकार का ज्ञान कराने के लिए प्रत्येक अलंकार की परिभाषा एवं उदाहरण का अभ्यास कराएँ। शिक्षक स्वयं नये–नये उदाहरण के माध्यम से छात्रों को परिचित करावें तथा छात्रों को भी नवीन उदाहरण लिख कर लाने हेतु प्रोत्साहित करें। इससे छात्रों में अलंकार पढ़ने के प्रति रूचि जागृत होगी।

रूपक – रूपकं रूपितारोपो विषये निरापह्वे। अनपहत (त्म छिपाए गए) विषय (उपमेय) में विषयी (उपमान) का आरोप रूपक अलंकार कहलाता है।

उदाहरण –

विद्यानाम नरस्य रूपमधिकंप्रच्छनगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः
विद्या बन्धूजनो विदेश गमने विद्या परम् देवतां
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः

उपमा – प्रस्फुटं सुन्दरं साम्यमुपत्मेय निभयित स्पष्ट रूप से कथित सुन्दर साम्य को उपमा अलंकार कहते हैं। अर्थात् किसी एक वस्तु की किसी दूसरी वस्तु के साथ उसके गुण, धर्म अथवा स्वरूप के कारण समानता तुलना की जाती है उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण –

मध्य तपोधनानां किसलयभिव–पाण्डुपुत्राणाम्

उत्प्रेक्षा – भवेत्संभावनोत्प्रेक्षा प्राकृतस्य परात्मना। पर (उपमान) के द्वारा प्रकृत (उपेमय) की संभावना ही उत्प्रेक्षा अलंकार हैं।

उदाहरण –

लिम्पतीव तमोडगानि वर्षतीवाञ्जनं नभः असत्पुरूषसेषेव दृष्टिर्विफलतागता

22. रसौ के रस से काव्यगत रसानुभूति :–

रस को काव्य की आत्मा माना गया है । आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि '' वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ''

परिभाषा –

सहृदय के हृदय में स्थित रति शोकादि का विभाव, अनुभाव, संचारी भाव से संयोग होने पर रस की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भावों की संख्या नौ मानी गई है।

वीर रस – उत्साह नामक स्थायी भाव का विभाव अनुभाव एवं संचारी भाव का संयोग होने पर वीर रस उत्पन्न होता है।

उदाहरण – कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

करूण रस – शोक नामक स्थायी भाव का विभाव अनुभाव एवं संचारी भाव से संयोग होने पर करूण रस होता है।

उदाहरण – मा! निषाद् प्रतिष्ठामगमः शाश्वती समाः ।
यद् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम् ।।

इसी प्रकार अन्य रसों की परिभाषा एवं उदाहरण देकर विषयाध्यापक छात्रों को रस का ज्ञान करावें। नवीन उदाहरणों को संकलन करने हेतु प्रोत्साहित करें जिससे छात्र संस्कृत श्लोकों में आये हुए रसों की अनुभूति करने में छात्र समर्थ हो सकें तथा श्लोक वाचन में छात्र आनन्द की अनुभूति करें।

23. सरल संस्कृत वाक्यों में लोकोक्ति एवं मुहावरे का प्रयोग कैसे सुदृढ़ीकरण करें –

मुहावरे और लोकोक्ति – मुहावरा कुछ पदों का समूह होता है जिसका शब्दार्थ या वाच्यार्थ न लेकर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है। 'लोकोक्ति' 'मुहावरा' से मिलती–जुलती होती है। लोकोक्ति पूरा कथन या वाक्य होता है जबकि मुहावरा अधूरा कथन या वाक्य होता है। लोकोक्ति का संबंध किसी घटना या प्रसंग से होता है, परंतु मुहावरे के विषय में कोई प्रसंग होना आवश्यक नहीं है। लोकोक्ति कभी–कभी सूक्तियाँ एवं शाश्वत कथन भी हो सकती है परंतु मुहावरा अपूर्ण वाक्य होने के कारण सूक्ति नहीं हो सकते।

1. अति लोभो न करणीयः – अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिए।
2 अति सर्वत्र वर्जयेत् – सभी बातों में 'अति' त्याज्य है।
3. आचारः परमो धर्मः – आचार सर्वोत्तम धर्म है।
4. चिन्ता जरा मनुष्याणाम् – चिन्ता मनुष्यों का बुढ़ापा है।
5. जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः – बूँद–बूँद से घड़ा भर जाता है।
6. नास्ति मोहसमो रिपुः – मोह के समान कोई शत्रु नहीं है।
7. मतिरेव बलाद् गरीयसी – बल से बुद्धि बड़ी है।
8. दूरतः पर्वता रम्याः – दूर के ढ़ोल सुहावने
9. सुखार्थिनः कुतो विद्या – सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ ?

इस प्रकार हम देखते हैं बोल–चाल के माध्यम से अनूठी सूक्तियाँ लोकोक्ति मुहावरा नित्य ही सर्वसाधारण के सामने रहती है वास्तव में इनका प्रयोग भाषा के अलंकरण के लिए ही होता है और इससे वाणी की प्रभावशीलता बढ़ जाती है। यदि आज भी बोल–चाल और लेखन के माध्यम से लोकोक्ति एवं मुहावरे का प्रयोग किया जाय तो राष्ट्रीय चरित्र विकास, सनातन अनुभवों नीति आचार कर्त्तव्य, अकर्तव्य का ज्ञान कराया जा सकता है इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए वाक्य प्रयोग सहित कुछ सूक्तियाँ संचित हैं –

पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।।

जैसा कहा है कि सांपों को दूध पिलाना केवल जहर को बढ़ाना है, मूर्खों को उपदेश करना भी क्रोध को बढ़ाना है, शांति के लिए नहीं अर्थात् सांप को दूध पिलाना जैसे विष बढ़ाने वाला है, वैसा ही मूर्ख को दिया हुआ उपदेश क्रोध को बढ़ाने वाला है, शांति करने वाला नहीं।

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ।
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः ।
समुद्रभासाय भवन्त्यपेयाः ।।

गुण, बुद्धिमानों में मिल जाने से गुण हो जाते है और मूर्खों में मिल जाने से वे ही गुण दोष बन जाते है। जैसे मीठे जल वाली नदियाँ समुद्र में मिलकर खारी बन जाती है।

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ।।

विद्या से विभूषित होने पर भी दुष्ट मनुष्य का साथ छोड़ देना चाहिए। मणि से सुशोभित सर्प क्या भयंकर नहीं होता ?

दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत्।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।।

दुष्ट के साथ मित्रता और प्रीति नहीं करनी चाहिए क्योंकि गरम अंगारा हाथ को जलाता है और ठंडा हाथ को काला कर देता है।

मुहावरा	लोकोक्ति
1. अधूरा कथन या वाक्य अधूरा होता है।	1. पूरा कथन या वाक्य होता है।
2. विशेष प्रसंग की आवश्यकता नहीं।	2. इसका संबंध किसी घटना या प्रसंग से होता है।
3. सूक्ति का रूप नहीं ले सकता।	3. सूक्ति का स्वरूप भी होता है।
उदा.— बहुरत्नाः वसुन्धराः पृथ्वी में बहुत रत्न हैं।	उदा.जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः बूँद—बूँद से घड़ा भर जाता है।

गतिविधि —

1. सर्वः स्वार्थः समीहते।
2. सत्यमेव जयते नानृतम्।
3. महाजनोः येन गतः स पन्थाः।
4. सुखमुपदिश्यते परस्य।
5. विद्या धर्मेण शोभते।
6. संघे शक्तिः कलौ युगे।
7. न कूप खननं युक्तं प्रदीप्तेवह्निना गृहे।
8. विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।

9. वीर भोग्या वसुन्धरा।

10. लोचनाभ्याम् विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ?

11. आज्ञा गुरूणाम् ह्यविचारणीया।

चक्र में लोकोक्ति एवं मुहावरे

1. उपर्युक्त उद्धरणों से लोकोक्ति एवं मुहावरा पृथक कीजिए।

2. उद्धरणों का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

3. इन्हें वाक्यों में प्रयोग करें।

4. पठित पाठों के आधार पर कुछ मुहावरे और लोकोक्ति स्मरण हो तो उसे लिखें।

5. हिन्दी के मुहावरे लेकर संस्कृत में रूपांतरित करें।

12. बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?

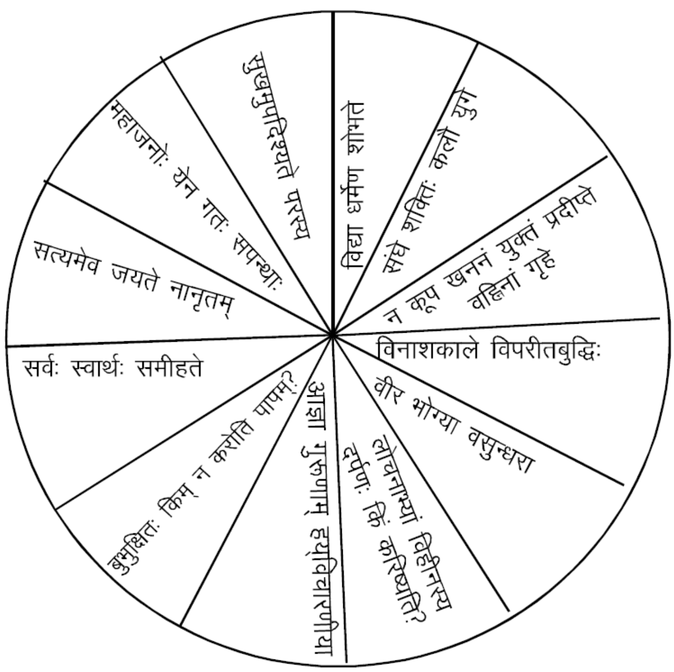

सीखने के प्रतिफल कक्षा-6

LS601

स्थानीय भाषा के शब्दों यथा राँधना, खाना, चलना, खेलना शब्दों को संस्कृत में व्यक्त करते हैं।

LS602

दैनिक जीवन में प्रयुक्त सामग्रियों के नाम संस्कृत में प्रस्तुत करते हैं -

जैसे सब्जी-शाकः फल-फलम्, पेड़-वृक्षः, छत्ता-छत्रम्, पानी-जलम्, पेन-लेखनी।

LS603

संस्कृत के गद्य एवं पद्य (श्लोकों) को सही उच्चारण के साथ पढ़ते हैं।

LS604

अपने परिवेश में मौजूद लोक कथाओं एवं लोकगीतों के नाम को संस्कृत में प्रस्तुत करते हैं।

जैसे - सुआ नृत्य - शुकनृत्यम्, डण्डा नाच - दण्डनृत्यम्, चूलमाटी गीत- चूलमाटी गीतम् आदि।

LS605

पाठ्यपुस्तक की पाठ्यवस्तु के संस्कृत शब्दों को शुद्ध रूप से लिखते हैं।

LS606

संवादात्मक पाठो को हावभाव के अनुसार पढ़ सकते हैं।

LS607

संस्कृत के नये-नये शब्दों के अर्थ संग्रह कर शब्द भण्डार में वृद्धि करते हैं।

LS608

कथा यात्रा वृत्तान्त, मेला तथा पर्यावरण से संबंधित पाठों के सारांश अपने शब्दो में व्यक्त कर सकेंगे।

LS609

किसी पाठ्यवस्तु की बारिकी से जांच करते हुए उनमे दिए विशेष बिन्दु को खोजते हैं।
अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।

LS610

विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार चढ़ाव के साथ पढ़ लिख पाते हैं।

LS611

नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।

LS612

विभिन्न अवसरों पर कही जा रही बातों को अपने ढंग में लिखते हैं।

LS613

विभिन्न विषयों, उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करते हैं।

LS614

कारक विभक्तियों का दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाते हैं।

LS615

विभाग्रियों/लकारों का प्रयोग दैनिक जीवन में कर पाते हैं।

LS616

किसी नवीन विषय पर विचार व्यक्त कर पाते हैं।

सीखने के प्रतिफल कक्षा-7

LS701

दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों यन्त्रों के नाम को संस्कृत में व्यक्त कर सकते हैं -

LS702

काल रचना के अंतर्गत लट, लड्. एवं लृट्लकार के रूपों के प्रयोग कर सकते हैं।

LS703

पाठ्यवस्तु पर सामूहिक चर्चा कर एक दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

LS704

अपनी भाषा के शब्दों को संस्कृत शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं।
यथा - दैनिक उपयोगी वस्तुओं के नाम, पशु पक्षियों के नाम।

LS705

गद्य एवं पद्य पाठ को सही उच्चारण के साथ पढ-लिख सकते हैं।

LS706

संस्कृत में लिखित लेख, कहानी व श्लोको को शुद्धोच्चारण के साथ पढ़ते हैं।

LS707

सूक्तियों/शुभाषित श्लोकों को शुद्धोंच्चारण के साथ पढ़ते व निहित भाव को समझते हैं।

LS708

कथा यात्रा वृत्तान्त, मेला पर्यावरण से संबंधित पाठों के सारांश को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं।

LS709

व्याकरणिक तत्त्वों का प्रयोग व्यावहारिक जीवन में कर पाते है।

LS710

पाठ्यपुस्तक में लिखित संवाद पाठ को पढ़कर आपस में छोटे-छोटे संवाद कर पाते है अथवा परिचय दे सकते हैं।

LS711

किसी पाठ्यवस्तु की बारिकी से जांच करते हुए उनमें दिए विशेष बिन्दु को खोजते हैं। अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।

LS712

विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ लिख पाते हैं।

LS713

नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।

LS714

विभिन्न अवसरों पर कही जा रही बातों को अपने ढंग में लिखते हैं।

LS715

विभिन्न विषयों उद्देश्यों के लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करते हैं।

LS716

कारक विभक्तियों का दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाते हैं।

LS717

विभक्तियों/लकारो का उचित प्रयोग कर वाक्य बना पाते हैं।

सीखने के प्रतिफल कक्षा-8

LS801

शरीर के अंगों के नाम, शाक, पुष्प, फल, दैनिक उपयोगी वस्तुओं के नाम पशु-पक्षियों के नाम विद्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामग्रियों के नाम आदि को संस्कृत में व्यक्त कर सकते हैं।

LS802

पाठ्यवस्तु में निहित पाठों के उद्देश्यों को व्यावहारिक जीवन में व्यवहार में ला सकते हैं।

LS803

पाठ्यविषय में निहित पाठों के संदर्भ में सामूहिक चर्चा करते हैं। एक दूसरे से प्रश्न भी करते हैं तथा अपना विचार भी देते हैं।

LS804

संस्कृत में अपना परिचय देने के साथ ही विभिन्न विषयों जैसे- विद्यालय, धेनु, उद्यानम्, गृहम् आदि विषयों पर संस्कृत के छोटे-छोटे सरल वाक्यों में अपना विचार व्यक्त कर सकते हैं। (लगभग 5 से 10 वाक्यों में)

LS805

लकारों का व्यावहारिक प्रयोग भी कर सकते हैं। संधि, समास, कारक, लिंग, विभक्ति, वचन, पुरूष, काल के विषय में सामान्य जानकारी रखते हैं व प्रयोग करते हैं।

LS806

प्रकृति चित्रण, पर्यावरण पौराणिक पाठों नैतिक मूल्यों से संबधित पाठों के मूल्यों को जान सकते हैं। समझकर व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं।

LS807

पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित गद्य, पद्य, कहानी, नाटक आदि पाठों में प्रयुक्त कठिन संस्कृत शब्दों के अर्थ जानते हैं तथा शब्दार्थो का संग्रह भी करते हैं। आवश्यकता अनुसार प्रयोग करते हैं।

LS808

पाठ्यविषय में संवाद एवं नाट्य पाठ को हावभाव के साथ पढ़ सकते हैं। हिन्दी के छोटे व सरल वाक्यों को संस्कृत में एवं संस्कृत के सरल वाक्यों को हिन्दी में अनुवाद कर सकते हैं।

LS809

किसी पाठ्यवस्तु की बारिकी से जांच करते हुए उनमे दिए विशेष बिन्दु को खोजते हैं। अनुमान लगाते हैं निष्कर्ष निकालते हैं।

LS810

नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।

LS811

विभिन्न विषयों उद्देश्यों में लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करते हैं।

LS812

विभिन्न अवसरों पर कही जा रही बातों को अपने ढंग में लिखते हैं।

LS813

कारक चिह्नों/विभाग्रियों/लकारों का प्रयोग दैनिक जीवन में कर पाते हैं।

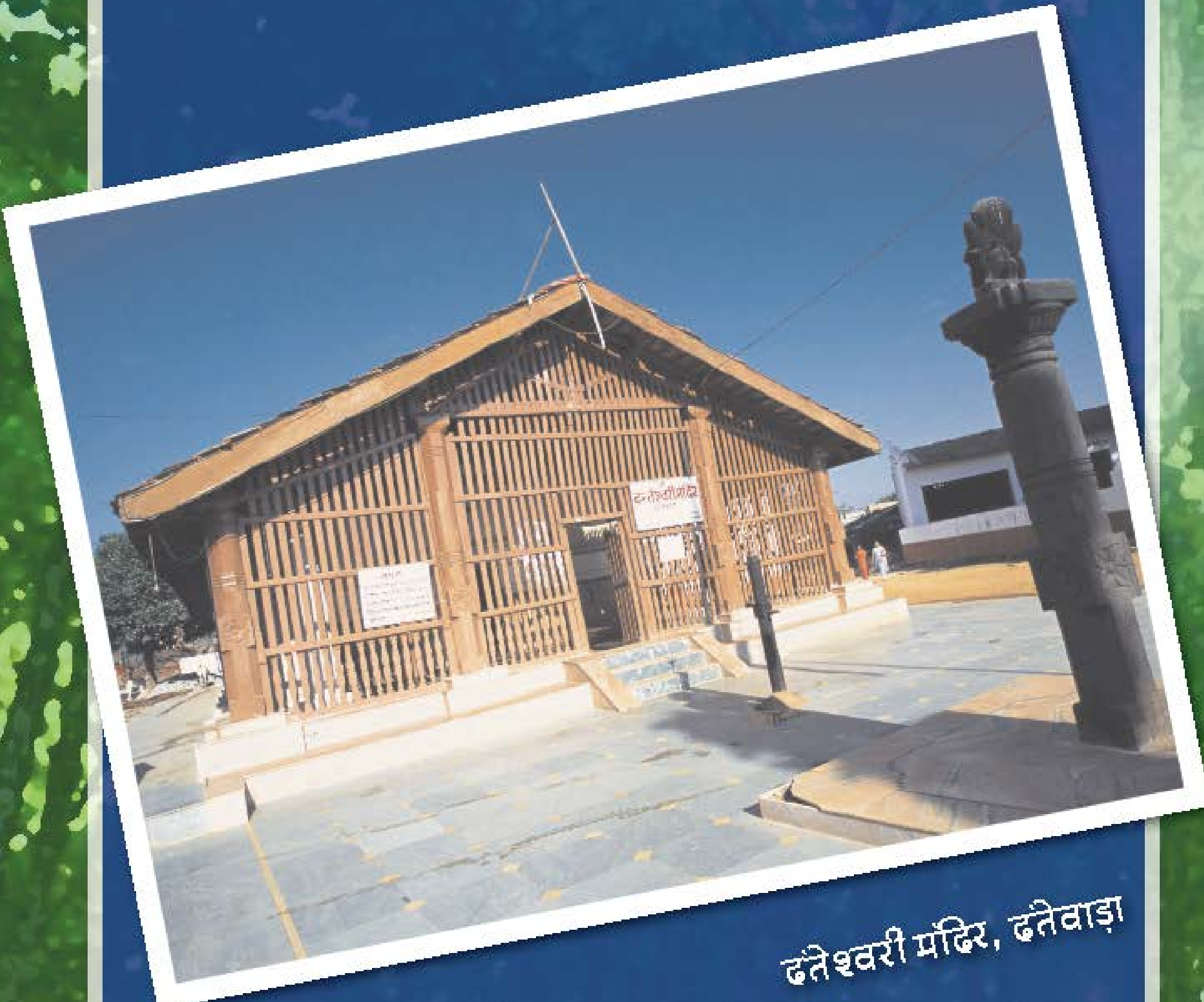

दंतेश्वरी मंदिर, दंतेवाड़ा

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर